



'रिदेह' १५ जून २००८ (वर्ष १ मास ६ अंक १२) एहि अंकमे अछि:-



महोदयश्री सृचना: २० म शताब्दीक सरश्रेष्ठा मिथिला बने श्री वामश्रेय सा 'वामवर्ग' जिनका लोक 'अभिनव भातखण्ड' केव नामसँ सेहो सोव करैत छन्हि, 'रिदेह' केव हेतु अपन संदेशे पठौने छथि आ२ ताहि आधाव पव हुनकव जाँरन आ२ प्रातिक रिषयमे रिस्तुत निरंध रिदेहक संगीत शिक्षा सुँभमे अ-प्रकाशित कवरौक हमवा लोकनिकेँ सोभागा भेटैत अछि ।



१. नो अँटी: या शरिशी श्री उदय नावायण मिह 'नचिकेता'

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेतजीक ठँठका नाटक, जे रिगत २३ वर्षक यौनभंगक पश्चात् पाठकक समूथ प्रस्तुत भ' बहन अछि । सरप्रथम रिदेहमे एकवा धावाराहिक कर्षे अ-प्रकाशित कएन जा बहन अछि । पढू नाटकक तेसव कल्लानक पहिन खेप ।

२. शोध लेख: मायानन्द मिश्रक अतिहास लौध (आगाँ)

३. उपन्यास सहस्ररौढनि (आगाँ)

४. महाकार महाभावत (आगाँ)



५. कथा - गणेशे गंजन- गौरवक मुला

गजेन्द्र ठाकुर- पहववाति

६. पद्य

मैथिली हेकु पद्य- वरीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो हेकु निखनन्हि, ह्रदा मैथिलीमे पहिन रैव जापानी पद्य रिधाक आधाव पव "रिदेह" प्रस्तुत कए बहन अछि अ रिधा ।

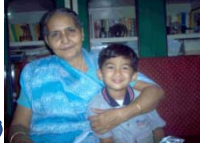
पद्य:

अ. रिस्तुत करि स्र. वामजी चौधरी



आ. ज्ञाति सा चौधरी आ२ ग. गजेन्द्र ठाकुर

७. संस्कृत मैथिली शिक्षा (आगाँ)



t. मिथिला कना (आगाँ)

७. पारिनि-सकाव- तीर्थ - डिक्करीब आँक मिथिला

१०. संगीत शिक्षा - श्री वामाश्रय मा 'वामवर्ग' ११. रौनाना प्रते- मुखाधिवाज/देरीजी: पिजबाक पम्फा



१२. पङ्गी अरुंध (आगाँ)

पङ्गी-सहालक श्री रिद्यानंद मा पङ्गीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी)

१३. संस्कृत मिथिला

१४. मैथिली भाषापक

१५. वचना लेखन (आगाँ)

16. VI DEHA FOR NON RESI DENT MAI TH ILS -Vi deha M th i l a T i r b h u k t i T i r h u t ...

महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) रिदित करि स्र. वामजी चौधरी (1878-1952) पव शोध-लेख रिदितक पहिन अँकमे अ-प्रकाशित भेल छन । तकर रौद हनकर पुत्र श्री दुर्गानंद चौधरी, ग्राम-कदपुव, थाना-अंधवा-ठाह १, जिना-मधुवनी करिजीक अ-प्रकाशित पाल्दुनिपि रिदित कायनियकेँ डाकसँ रिदितमे प्रकाशिनार्थ पठौनहि अछि । अ गोट-पचासक पद्य रिदितमे नरम अँकसँ धावारातिक कपेँ अ-प्रकाशित भ' बहन अछि ।

महत्त्वपूर्ण सूचना: (२) 'रिदित' द्वारा कएन गेल शोधक आधाव पव मैथिली-अंग्रेजी आँ अंग्रेजी-मैथिली शिद्ध कोशि (संपादक गजेन्द्र ठाकुर आँ नागेन्द्र कृमाव मा) प्रकाशित कवराँउन जा' बहन अछि । प्रकाशकक, प्रकाशिन तिथिक, पुस्तक-प्राप्तिक रिधिक आँ पौथीक मूनाक सूचना एहि पृष्ठा पव शीघ्र देन जायत ।

महत्त्वपूर्ण सूचना: (३) 'रिदित' द्वारा धावारातिक कपेँ अ-प्रकाशित कएन जा' बहन गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्ररौहनि' (६पन्नास), 'गल्प-शुद्ध' (कथा संग्रह), 'भानसवि' (पद्य संग्रह), 'रौनाना प्रते', 'एकाङ्की संग्रह', 'महाभावत' 'बृह्म चरित' (महाकारा) आँ 'यात्रा वृत्तति' रिदितमे संपूर्ण अ-प्रकाशिनक रौद प्रिठ' फार्ममे प्रकाशित होयत । प्रकाशकक, प्रकाशिन तिथिक, पुस्तक-प्राप्तिक रिधिक आँ पौथीक मूनाक सूचना एहि पृष्ठा पव शीघ्र देन जायत ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (४): श्री आधाचरण मा, श्री अशुक्ल कृमाव सिंह 'मौन', श्री प्रेमसकव सिंह, श्रीमति रिता बानी, श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, श्री कैलाश कृमाव मिश्र (गदिवा गाँधी वास्तुवीय कना केन्द्र), श्री थाम प्रकाशि मा आँ डॉ. श्री शिर प्रसाद यादर जीक सम्यति आयन अछि आँ हिनकर सभक वचना अगिना १-२ अँकक रौदसँ 'रिदित' मे अ-प्रकाशित होयय नागत ।

रिदित (दिनाक १३. जून, २००८)

१.संपादकीय २.संदेश

१.संपादकीय रर्य: १ मास: ७ अँक:१२

माग्यरव,

रिदितक नर अँक (अँक १२ दिनाक १३. जून २००८) अ परिनिश भ' बहन अछि । एहि हेतु नाँग आँन कक

<http://www.videha.co.in> |



नचिकेत्याजीक नाठक लो अर्पू: मा श्रिणी तेसव कल्लानक पहिन थेष ङ-प्रकाशित भ बहन अछि । गगेशि र्गजन जीक कथा आरि रिस्यूत करि वामजी टोषवीक अप्रकाशित पद्य सेहो ङ-प्रकाशित भए बहन अछि ।

वरीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो कैकु निखनहि, ढुदा मैथिलीमे पहिन रैव जापानी पद्य रिधाक आधाव पव "रिदेह" प्रसूत कए बहन अछि ङ रिधा ।

शेष स्वायी सुंभ यथारत अछि ।

अपनेक वचना आरि प्रतिफ्रियाक प्रतीक्षामे । रविष्ठा वचनाकाव अपन वचना हस्तनिथित कपमे सेहो नीचाँ निखन पता पव पठा सकैत छथि ।



गजेंद्र ठाकुर

३+६, पाँकेट-सी, सेकठ-ए, रसतुरङ्ग, नर देहनी-९९००१०, फ़ैक़:०९९-४९११९१२३.

ggajendra@videha.co.in ggajendra@yahoo.co.in

१.संदेश

१.श्री श्री. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए बहन छी तकर चवचा एक दिन मैथिली भाषाक अतिहासमे होएत । आनन्द भए बहन अछि, ङ जानि कए जे एतेक गोठ मैथिल "रिदेह" ङ जर्नलकेँ पङ्क्ति बहन छथि ।

२.श्री डॉ. गगेशि र्गजन- "रिदेह" ङ जर्नल देखन । सूचना श्रौद्यापिकी केव उपयोग मैथिलीक हेतु कएन ङ सुन प्रयास अछि । देरनागरीमे ठागप करबामे एहि ३३. रर्यक उमविये कर्ग, होगत अछि, देरनागरी ठागप करबामे मदति देनाग सम्पादक, "रिदेह" केव सेहो दायिद्व ।

३.श्री वामश्रिय ना "वामवर्ग"- "अपना" मिथिनासँ सर्रिधित...रिषय रसुसँ अरगत भेनहँ । ...शेष सभ ढुशिन अछि ।

४.श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी, साहित् आकादमी- गठबनेठ पव प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "रिदेह" केव लेन रीधाङ आरि शुभकामना स्लीकाव कक ।

५.श्री श्रुङ्गनाथ सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "रिदेह" क प्रकाशिनक समाचाव जानि कलेक चकित ढुदा रैसी आल्लादित भेनहँ । कानचकेँ पकड़ि जाहि दूवदृष्टिक पविचय देनहँ, ओहि लेन हमव र्गनकामना ।

६.श्री डॉ. शिरश्रसाद यादर- ङ जानि अपाव हर्ष भए बहन अछि, जे नर सूचना-आन्तिक ष्केत्रमे मैथिली पत्रकावितारकेँ प्ररेशि दिअएरक साहसिक कदम उठाओन अछि । पत्रकावितामे एहि प्रकावक नर प्रयोगक हम स्लगत करैत छी, संगहि "रिदेह"क सफलताक शुभकामना ।

१.श्री आगाचवण ना- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशिन- ताछमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशिनमे के कतेक सहयोग करताह- ङ त२ भरिषा कहत । ङ हमव ++ रर्यमे १३. रर्यक अरुभर बहन । एतेक पेष महान यत्रमे हमव श्रिङ्गापूर् णाहूति श्रापु होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।

+श्री रिजय ठाकुर, मिशिन रिन्नेरिद्यालय- "रिदेह" पत्रिकाक अक देखनहँ, सम्पूर्ण ठीम रीधाङक पात्र अछि । पत्रिकाक र्गन भरिषा हेतु हमव शुभकामना स्लीकाव कएन जाओ ।



१. नाटक

श्री उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' जन्म-१९३९ अ. कनकपुरा। १९७७ मे १३ रविक उत्रमे पहिन कार संहत 'करयो रदन्ति'। १९७९ 'अमृतस्य पुत्राः' (करिता संकनन) आर 'नायकक नाम जीरन' (नाटक)। १९७९ मे 'एक डन बाजा'। 'नाटकक जेन' (नाटक)। १९७७-७७ 'प्रवारुर्जन'। 'वामनीना' (नाटक)। १९७९मे जनक आर अग्र एककी। १९८९ 'अनुभव' (करिता-संकनन)। १९९९ 'प्रियरदा' (नाटक)। १९९७-'वरिन्दनाथक रीन-साहित' (अनुवाद)। १९९९ 'अनुप्राति'- आधुनिक मैथिली करिताक रीगनामे अनुवाद, संगति रीगनामे दुर्ती करिता संकनन। १९९९ 'अग्नी ओ पवितास'। २००२ 'थाम थेयानी'। २००७मे 'मधमपुत्रक एकरचन' (करिता संहत)। भाषा-रिज्ञानक क्षेत्रमे दसठी पोथी आर दू समयसँ रीगी गोध-पत्र प्रकाशित। १४ ठी पी.एच.डी. आर २९ ठी एम.फिन. गोध-कर्मक दिगी निर्देशे। रीडिंग, सुवत, दिल्ली आर हैदराबाद रि.रि.मे अध्यापन। संप्रति निर्देशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर।

लो अद्वी : मा शरिणी

(चावि-अकीय मैथिली नाटक)

नाटककाव उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' निर्देशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर

(मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककाव श्री नचिकेताजीक ठैठका नाटक, जे रिगत १३ रविक मीन लुगक पश्चात् पाठकक समुख प्रस्तुत भ बहन अछि।)

तेसब कलान जावी....रिदेशक एहि रीवहम अक १३ जून २००८ सँ।

लो अद्वी : मा शरिणी

तेसब कलान पहिन खेप

तेसब कलान

भाषण - मचपव लेता आ रामपथी हरा प्ररित ठाठ छथि-हनके दनु पव प्रकाशि पडैत छनि। रीकी मच पव नगगत अछि एखनहु लोकका रुहेस अछि-सँ का अर्थ- जात्रत अर्थ-मृत जकाँ पडैत छथि। मात्र चावि ठी मृत सैनिक रीदूक तानने भाषण - मचक आस - पास पहवा



दैत नजबि खारि बहन छनाह । तीनटाँ स्पॉट नाँट—दूटाँ भाषा-मंच पब आ एकटाँ बूँद
दवरञ्जा पब पड्न ।]

- रामपत्नी : (झुबधाव झुबमे) एकटाँ रात साफ-साफ राजू त'...
- नेता : कौन रात ?
- रामपत्नी : गयेह, आ चोबरौ जे किछ राजि बहन छन...
- नेता : से ?
- रामपत्नी : खहाँ तकब सबटाँ रिश्नास करै छी ? (नेता हँसि दैत छथि । से देखि रामपत्नी हरा थिसिया जागत छथि ।) हँसि किये बहन छी ?
- नेता : किये ? हँसि पब पानंदी छैक की ?
- रामपत्नी : हँसि पब कियेक बहत पानंदी ? झुदा खाब कतेको रात पब पानंदी त' छैक.. खहाँक पाँटी तकबा मानत तखन ने ?
- नेता : हमब पाँटी जकबा माननक अछि, हमबा ताहि पब कौन आपत्ति ?
- रामपत्नी : (रातकेँ काँटेत) नूठ ! सरँटाँ बूसि !
- नेता : से कौना ?
- रामपत्नी : (तर्क दैत) कियेक ? आ नथि निश्चित भेन जे हमसरँ राँहन बहरँ एकटाँ रँधन मे ?
- नेता : हँ, गठ-रँधन त' भेन छन, जेना मिनन-जूनन सबकार मे
होग छग... ?
- रामपत्नी : (राँगा करैत) आ तकब कैंकटाँ असून सेहो होगत छैक....
- नेता : जेना ?
- रामपत्नी : जेना सरँटाँ महत्पूर्ण रात पब आपसमे राँतचीत क' कए तखन दुनियाक सामने झूँत खोनरँ... की ? एहन निश्चय भेन छन रा नथि ?
- नेता : हँ... !
- रामपत्नी : आ ताहि रातपब हमसरँ सबकार केँ राँहब सँ समर्थन द' बहन छी... छै कि नथि ?
- नेता : रेशिक ! ठीके राँत राजि देनहँ ।
- रामपत्नी : झुदा खहाँ की क' बहन छी ?
- नेता : की ?



रामपत्नी : (आब धीवज नथिं ध' परोत छथि--)

तखन रात - रात पब हमबा सरँ सँ छँटि कए बिस्कुन आने रात किये करे नागे छी ? सदिखन
बिरोध किये करे छति छी ?

नेता : "राह रे भैया ! राह कहैया—

जेह कह छी जतरें ठा हो—

सरँ मे कहि दी ता-ता-थैया ? "

की बूने छी , अहाँ सरँक नाबुबि धेने चनत हमब पार्टी ?

रामपत्नी : प्रयोजन पड़त त' सह करे पड़त !

नेता : है ! से हिछा अगिये दी त' नीक ! की त' हम सबकाब केँ नैतिक समर्थन दे छी ? तकरब माले की,
अस्येह जे अहाँ अठ - सँट जेह किछ राजरँ , है-मे-हँ कह' पड़त ? (रामपत्नी किछ कह'
छति छथि) रात त' ओ कनाकाब नाख ठाकाक कहि बहन छन । चोरी करैत छन तें की ? तर्क
त' ओ ठीके देने छन...सूठ त' नथिं राजि बहन छन ओ !

रामपत्नी : तखन आब की ? चोब उचरू केँ अपन पार्टी मे बाथि नियह ।

नेता : किये ? राजनीति मे अन्तक बँडका-बँडका चोरी क' कए कतेको गोठे त' प्रथात भेये गेन
छथि । आरँ हुनका सभक पास हेरैरक योग्य कतेको रस्तु हेतनि ! अदा तकरब नेन अहाँ आ
अहाँक पार्टी किये डरे छी ?

रामपत्नी : हम सरँ किये डवरँ ? हम सरँ की सबकाब चनरें छी जे डब हैत ?

नेता : (हँसत) ठीके कहनहँ ! सरँ सँ नीक त' छी अही सरँ-ने कोनो काज कबरक दायिन्न ने कोनो हेरैरक
दुश्चिन्ता, मात्र रीच-रीच मे हिनका सरान पूछ त' हुनका खेदाड' केँ भगाड' ! नहि त' हमबा
सभक पार्टीकेँ केँ खरबदाब करे नागे छी..... डबा धमका क' छति छी राजी माबि नी---

रामपत्नी : अ त' अहाँक सोच भेन । हम सरँ त' मात्र सदर्थक आलोचना करैत छी—"काँग्रेसकेँ फिर्तिसिद्धम" !

नेता : आ हम सरँ अहाँ लोकनिक पाड' घबिते फकवा कह छी—

"राह रे रामा रँम-रँम भोले !

दाहिना नथिं जे रामा रौले !

दड्डिन घुबने प्रां बहत नथिं !

अकक जेरो साख बहत नथिं !

कतय चकेरा, सामा डोले,

"राह रे रामा रँम-रँम रौले ! "



रामपत्नी : (एसगरे रांग्या करैत थपड़ो पाड़ोत छथि) राह ! करिता त' नीके क' ले छी ।

नेता : हम सर छी बाजनीतिक उपज, हमवा सर बूते सरैठा सभर अछि....

रामपत्नी : छी त' नेता, हूदा भ' सकैछी....

नेता : (राँत केँ जेना लोक लेत छथि) अतिनेता सेहो !

[कहिते देवी राँहब हला मटे नागेत अछि—जेना उच-स्रवमे फिन्क गीत राजि बहन हो ; तकबहि सगे तानीक गड़गड़ो हट्टि, सीठीक खराज सेहो ।

हो-हला होगत देवी मटो पव सुत्तयान लोग सरैठा मे जेना खनरनी मटि गेन हो । सरँ का हड़रड़ो ! कए उठैत एक-दोसवा सँ पूछि बहन छथि—की भेन, त' की भेन ? '

तारत एकठा नमहव माना पहिबने एकठा फिन्की होरो प्रवेशे करैत छथि । पाछाँ-पाछाँ पाँच-दसठा धिया-पुता सरँ 'अँटेहाफ'क नेन धारित होगत छथि । दू-चाबि गोठेक खाता पव गरक संग अपन हस्तारक करैत—“रँस, आरँ नफि, राँकी राँदमे....” कहैत अतिनेता मँचक दिसि अग्रुआ आरैत छथि । आँथिक कविया चया खोनि हाथ मे लेत छथि । मँच पवक लोक सरँ तानीक गड़गड़ो हट्टि सँ हुनकव सगगत करैत छथि—तारत धिया-पुता सभ धुबि जागछ ।]

अतिनेता : (भाषा-मँच पव चठोत) नमस्कार रँदवी राँबू, जय सियावाम !

नेता : नमस्कार ! हूदा अहाँ केँ की भेन छन जे एत' आरँ पड़न ?

अतिनेता : रँह... जे होगते छैक... अपन 'सुठै' अपनहि क' बहन छनहुँ मोठेव सागकिन पव सराव भ' कएआ कि अँक्लिडेठै भ' गेन... आ सोमे एत' चन अयनहुँ...

नेता : अहो भाग्या हमवा सभक ।

अतिनेता : (हाथ सँ हुनक राँत केँ नकावरँक हूदा देखरैत) जाय दिख ओहि राँत केँ, (रामपत्नी हरा केँ देखा कए) हूदा.. हिनका नहि चिन्हनिथनि ।

नेता : ओ-हो ! अ छथि नरीन निछुन ! काँमरेड हमव सभक समर्थक थिकाह ।

अतिनेता : (सनाम ठोकेत) नान सनाम, काँमरेड !

रामपत्नी : (हाथ जोड़ो कए नमस्कार करैत छथि—ततरौ प्रसन्न नहि बुँसागत छथि ।) नमस्कार !

नेता : (अतिनेताक परिचय कवारैत) हिनका त' चिन्हते हेरनि.... !

[रामपत्नी हरा केँ हाथ हिनारै सँ पहिनहि राँकी जनता चाँकोव करैत कहैत अछि—“रिबेक हूमाव ! ”आ पुनः तानी रँजा कए हिनक अतिनन्दन करैत अछि । अतिनेता अपनहुँ कखनहुँ मुँकि कए, कखनहुँ आधुनिक तर्गिमाये हाथ हिन कए त' ककबहुँ दिसि “आदार” कवरँक अतिनय करैत छथि—हुनक हार-भार सँ स्पष्ट अछि जे अपन लोकप्रियताक खुरँ उपभोग क' बहन छथि ।]



रामपत्नी : हिनका के नहि जानत ? श्री.री. केव छोट पदर्ता सँ न' कए हिनका पदर्ता धरि जा त' सदिखन नखा दैत छथि---

श्रुतिनेता : (एकाधिक अर्थमे) छी त' हम सरंठी पदर्ता पब, झुदा पदर्ताशि कबरौ आ करैरौ नैन नधि... मात्र श्रुतिनय कबरौ नैन !

रामपत्नी : 'पदर्ताशि' किये नधि..

श्रुतिनेता : (राका केँ पूवा नहि करै दैत छथि) हम तँ मात्र सेह राजे छी जे रात खाने का गठेत छि...

नेता : ठीक ! पदर्ताशि त' ओ कबत जकवा सदिखन किछ नर कहरौक आ नर खरैवि रैचरौक 'ठेनशिन' बहन हो ! (हेडनागन देखेरौक नैन दूनु हाथ केँ पसावि कए-) 'ब्रेकिंग न्यूज' नरका खरैवि, ठेठका खरैवि, हेडनागन !

श्रुतिनेता : ओ राँव—हम ने नर रात कहे छी आ ने कहि सकै छी... हमब डोवि त' कथाकाव आ निर्देशकक हाथ मे बहेत छि... ओ कहेत छथि 'बाम कछ' त' 'बाम' कहे छी, कहे छथि 'नमाज' पठू त' सेह करै छी ।

श्रुतिचर 1 : कहन जाग छनि, राम दिसि गूक आ खुरै नावा नगाड....

श्रुतिचर 2 : त' शोब कब' नागेत छथि "मानछी ना" "मानरौ ना" !

श्रुतिचर 1 : मानरै नधि, जानरै नधि...

तोवा आब केँ ग्वदानरै नधि...

श्रुतिचर 2 : हम जे चाली माले पडत,

नधि त' बाज गमारै पडत !

(नेता आ दूनु श्रुतिचर हँसि दैत छथि । श्रुतिनेता सेहो कौतुकक रौध करै छथि)

रामपत्नी : (राँगा करैत) माने जा रूमी जे अहाँ जे किछ करै छी, सरंठी घासन-पीठन प्रबनके कथा पब.... ?

श्रुतिनेता : घासन हो रा पीठन, तकब दायिन्न हमब थिक थोडरै ?

रामपत्नी : त' ककब थिक ?

श्रुतिनेता : तकब सबक दायिन्न छनि खान-खान नोकक... हमब काज मे राँकी सरंठी त' प्रबाने होग डग...कहियहू- कखनहू 'दायनंग' आ गीतक रौन सेहो ...झुदा किछ बहिते डग नर, नधि त' तकवा परिनक किये नेत ? (एतरौ सुनतहि चोब उठि कए ठाठ होगत छि)

चोब : अरे, गहो त' हमबहि रात दोहवा बहन छथि...जे...

श्रुतिचर 1 : नर नधि, किछ नधि, किछ नर नधि...



- खन्नचव २ : रात पबाने, नर पबिचय...
- खन्नचव १ : सौ मे खाधा जानने रात...
- खन्नचव २ : राँकी सेहो डुगहे साथ !
- चोव : (दुनूक करिता गठराँक श्यास केँ खन्निकाव करैत आ अपन तर्क केँ आगाँ रठरेत) नधि, नधि हम 'मज्ाक' नहि करि चहि छी...गयेह त' हमरुँ कहि चहि छनहुँ जे ससाव मे सरतवि पबाने रात पसवन अछि...नर किछु होगु डुग... ह्दा कहियह - कखनह...
- राँजारी : (गना खावि कए...एतराँ कान, जागि जेरौक राँदो यात्र श्रोताक भूमिकाक निरति क' बहन डुनाह) है-है, आरँ मनि जेनियह तोहव रात नर- पबान दय... ह्दा कहि छह 'ससाव' सँ राँहव निकनू तखन नर- पबानक सरँठा हिसारँ रदनि जागु डुग ?
- चोव : हमवा मन चोव की जानत खान ठामक खरँबि ?
- खन्नचव १ : ठीक !
- खन्नचव २ : चोव की जानत सुन्नक महिमा ?
- चोव : जतय हम सरँ एखन छी, 'त' सकैछ एतहुका नियम किछु आव हो...
- अभिलेता : ठीक कहनह हो ! 'त' सकैछ, एतय ले किछु नर होगु डुग, आ ले कडु पबान !
- नेता : ले का दछिन बहि सकैछ आ ले राँम !
- चोव : आ ले नेता आ अभिलेताक रीच मे कोनो हर्क बहि जागुछ...
- अभिलेता : (हँसत) ओहना, हमवा सबक पृथ्वी पव नेता थोड्े कोनो नर राँत कहि छथि... खानी हमरे सरँ पव दोष किये दै जागु डुग नोक ?
- रामपथी : आ रिनू अभिलेता भेले कि का नेता रँनि सकैत अछि ?
- चोव : किन्नह नधि !
- नेता : ओना देखन जाय त' दुनियाँ मे एखन 'काँस्पिरीशन' रठरे रिसी छैक...सरँठा अभिलेता चहि छुगु जे हमरुँ नेता रँनि जागु... हमरुँ किये नधि देश चना सकै छी ?
- चोव : खानी हमरे सबक जाति-रिवादवी छुगु जे कखनह सपनो नधि दोधि सकै छुगु नेता रँनराँक...चोव- उचक्का-भिखारी- बन्दीरना छी...छनहुँ आ सह बहि जायर...
- रामपथी : ह्दा अरुँ सरँ केँ मोसकिन होये रना अछि....
- चोव : किये ?
- रामपथी : किये त' चोव नहियो नेता रँनि सकय, नेता-नोकनि त' चोवी करे मे ककबह सँ पाछाँ नधि होगु छथि । जेम्हरे देखु... सरँ ठाम 'कँडन' एक सँ रठरे कए एक...



नेता : (थोमेत) मोन बाखर...खुँक पाठीमे गूडा-रँदमाशि भवन थुँ...सर छठेन चोब-उचक्का...(एहि रात पब चोब-उचक्का-लिख-मंगनी खादि सर हँसि दैत छथि।)

खलिनेता : (रामपथी, नेता केँ किछ कर्तुं शिष्ट रोजे नगताह से बुँमि, तकरा लोकैत) ओ बाबू ! हम त एत नर छी , हुँदा हमवा त नागोये एत ने किछ 'हम्ब' थीक आ ने कछ खनकब तेँ ने चोबीक प्रम उठै छुग आ ने सीना जोबीक !

चोब : ठीक...ठीक ! रिक्कन ठीक कहनहँ।

(खलिनेताक रात शुक होगत देवी मँच पब एक गोठ उँच- रँशीय महिना प्ररेशि करैत छथि आ खलिनेताक राद चोब केँ उठि कए ठाठ भू रात करैत देखि सोमे चोबक नग चनि आरै छथि अपन प्रम पूँछे।)

महिना : (चोब सँ) एकठा रात कछ... एत स्रआक द्वाव त' गयेह थिक कि नहि ? (रँद दवरँज्जा केँ देखा कए)

चोब : आँय !

महिना : स्रआक दवरँज्जा... ?

बमणी मोहन : (उँसुकता देखरैत, उठि कए नग खरैत) हँ-हँ ! गयेह त' भेन स्रआक प्ररेशि द्वाव !

महिना : (बमणी-मोहन दिस सप्रम) त' एत' की कोनो क्यू- 'सिष्टम' छुग ?

राजारी : (उठि कए ठाठ भू जागत छथि, जेना पुनः कताव रँनारै नेन जूँटि जैताह) हँ से त' छुगहे....

(फ़मशः)

२.शोध लेख

मायानन्द मिश्रक गतिहास ऱोध (आँगा)

प्रथम शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित/ आ' स्त्री-धन केव संदर्भमे

श्री मायानन्द मिश्रक जन्म सहवसा जिनाक रँनेलिया गायमे 17 अगस्त 1934 अ.केँ भेनहि । मैथिलीमे एम.ए. कएनाक राद किछ दिन अ आकाशिरानी पठनाक चोपान सँ संरँह बहनाह । तकरा राद सहवसा काँनेजमे मैथिलीक र्वाख्याता आ' रिभागाध्यापक बहनाह । पहिले मायानन्द जी करिता निखनहि,पढाति जा कय हिनक प्रतिभा आनोचानामेक निरँध, उपन्यास आ' कथामे सेहो शकठ भेनहि । भारूँ नोठा, आँगि मोय आ' पाखव आँव चन्द्र-रिन्दू- हिनक कथा संग्रह सभ छहि । रिहाइ पात पाखव , मंत्र-पुत्र ,खोता आ' चिठे आ' सूर्यास्त हिनक उपन्यास सभ छुँ ॥ दिशाँतव हिनक करिता संग्रह छुँ । एकव अतिविज सोने की लेया माठी के रोग, प्रथम शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ' स्त्री-धन हिनक हिन्दीक प्रति छुँ । मंत्रपुत्र हिन्दी आ' मैथिली दुनु भाषामे प्रकाशित भेन आ' एकव मैथिली संस्कारक हेतु हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएन गेनहि । श्री मायानन्द मिश्र प्ररोध सम्मानसँ सेहो पुरस्कृत छथि । पहिले मायानन्द जी कोमन पदानीक बचना करैत छनाह , पाठ्याँ जा कय प्रयोगवादी करिता सभ सेहो बचनहि ।

मायानन्द मिश्र जीक गतिहास ऱोध

प्रथम शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित/ आ' स्त्री-धन केव संदर्भमे



पुरोहित

पुरोहित हिन्दीमे छ्दि आऽ शूथनाक तेसव पौथी थीक । दूरक्षित जकवा मायानन्दजी स्वरिधाकर्षेँ आशीरचन सेहो कहि गेन छ्दि मँ एकव श्रावस्तु भेन छ्दि ।

पुरोहित केव आबस्तु दूरक्षित आशीरचन मंत्रसँ होगत छ्दि । शुन यजुर्वेदक अध्याय २२ केव मंत्र २२ “ ॐ आब्रह्मन...” मँ “नः कल्पाम्” धरि छ्दि । मिथिनामे एहि मंत्रक संग अन्तिममे “ ॐ मंत्रार्थी सिद्धयः संतु मनोवथाः । शिवुणां रूक्षिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर” ॥ एकव सेहो मंत्राचाव होगत छ्दि, आऽ एहि अन्तिम दू श्लोकसँ ग्रा मंत्र आशीरचनक कप नए नैत छ्दि । कावण यजुर्वेदीय २२/२२ मंत्र सौसेँ भावतमे देशेभक्ति गीतक कपमे मंत्राचाव होगत छ्दि । तकर बाद लेखकीय प्रस्तारना जकवा पुरोहितमे रिनियोगक नाम देन गेन छ्दि, केव श्रावस्तु होगत छ्दि । पुरोहित शतपथ ब्राह्मणकालीन समाज पव आधावित छ्दि ।

रिनियोगमे पूर्ब आऽ उतव वैदिक ग्रण, महाभावत कान गलादिक कान निधविण पव चवचा कएन गेन छ्दि । संग्वास आऽ मोक्ष धावणाक श्रेशेँ, सूत्र साहित्य, आवाणक आऽ उपनिषद आऽ ब्राह्मण ग्रंथक बचनाक सेहो चवचा छ्दि । कर्मणा केव रदनाने जन्मना सिद्धांतक श्रावस्तु आऽ शूद्र शिद्धक उद्भव, नगवक, अतत ऋद्राक, उद्यागक सुदूह किवणक आऽ लोहाक श्रयोगक सेहो चवचा भेन छ्दि । हेव मायानन्द जी ग निथि जागत छ्दि, जे दशिवज्ज ग्रहण १+०० मे भवत आऽ कृषिक-कम्सागठक सम्मिलित समूह सबस्त्री तठसँ रास नदी पाव करैत गनारूत परत श्रदेशे होगत ०२ लोकनि कोशिन मिथिनाक बाजतंत्रक, कृष-पाँचानक संस्कृतिक रिक्सित होएरिसँ पूर्बि, स्थापना कएन छ्दिनाह ।

पुरोहित तेवह ठा सञ्जामे रिभक्तु छ्दि आऽ एकव अन्तु उपसंहारसँ होगत छ्दि । श्रथम सञ्जा दक्षिण पाँचानक कापिनानगवसँ शुन होगत छ्दि । अथरिणपल्लीक पशुशाना, साँम होगत देवी उठैत धुँआक चवचा छ्दि । मेधा आऽ कृशेरिन्दुसँ कथा आगु रैहैत छ्दि । ऋषि गानरक आश्रममे ऋगवेदकेँ कठाग्र कवाएन जएरौक आऽ बादमे जाऽ कए ग्रुषि संरधी शिक्षा देन जएरौक रणन छ्दि ।

दोसव सञ्जामे बाजा श्रावण जेरौनिक मूर्थ पुत्र द्वारा ब्राह्मणक अपमानक, श्रथम श्रात्रिय आऽ दोसव पुरोहित ब्राह्मणक रणन छ्दि ।

तेसव सञ्जामे आचार्य चाणायणक अपमानक कावण पुरोहित रञ्जा द्वारा पौवहित कर्म नहि कवरौक निर्णयसँ श्रजाजनक दैनिक अग्निलोत्र कार्य, आऽ रिना नग्नक ग्रुषि आऽ राषिज्य कार्यमे होय रैना भाँठक रणन छ्दि ।

चतुर्थ सञ्जामे रास कथा आऽ भावत ग्रहक चर्चा अरैत छ्दि आऽ एतय मायानन्द जी पाश्चात् दृष्टिकोणक अन्वसवण करैत छ्दि । जय कारकेँ भावत ग्रह कथाक कप दए देन गेन- ग रकतुरा अनायासहि दए बहन छ्दि मायानन्द मिश्र ।

पाँचम सञ्जामे रैथ द्वारा उपनयन संस्कार छेडेरौक चवचा छ्दि, ऋदा कृत्रिय पुत्र आऽ पुत्री दूनुक उपनयन करैत छ्दिनाह । रैथ कथा शिक्षासँ दूव जाऽ बहन छ्दिनाह आऽ ब्राह्मण कथा ग्रुवकनक अतिविज्ज पितसँ शिक्षा नए बहन छ्दिनाह । ब्राह्मणकेँ पौवहितसँ कम समय भेटैत छ्दिनाह ।

छठम सञ्जामे ब्राह्मण पुरोहित द्वारा अथरि वेदकेँ नहि मानरौक चवचा छ्दि ।

सातम सञ्जामे अथरिपल्लीमे अथरिरेदीय संस्कारक शिक्षा आऽ श्रथम श्रेणीक ब्राह्मण द्वारा ०३ नहि जएरौक चवचा छ्दि ।

आठम सञ्जामे गदासेरमे वधदोह, अग्निबोहण, मल्लग्रह, असिचानन, नक्षत्रभेद आऽ रिनक्षणा अन्वृष्टिक चवचा छ्दि, आऽ रासपल्लीक लोक द्वारा अन्वृष्टिक कवरौक चवचा छ्दि । रासपल्लीमे त्राव ककष भावत ग्रहक कथा कहि बहन छ्दिनाह । भावत ग्रहक रैहैत पूर्ब भावत, त्रिसे, किरि आऽ सृजय मिश्रित जनक आर्यवृत्तमे शूद्र नामसँ स्वमेवियाक जियसूद्रक स्मृतिमे अपनारकेँ गौवर देरौक हेतु सूद्र कहरौक रणन छ्दि ।

नरम सञ्जामे तनुवराय द्वारा मत्री निमित्त रस्वमे तथीयता देन जएरौक कावण भेन अन्वृष्टिक चवचा छ्दि, पहिने ग अन्वृष्टिक नहि छ्दि । अथरिण आऽ यात्रिक ब्राह्मणमे भेदक चवचा छ्दि ।

दशम सञ्जामे शिखदेरक पूजा अनार्य द्वारा होएरौक आऽ अथरिण पुरोहित द्वारा एकव अन्वृष्टिक चवचा छ्दि । रासपल्लीमे अक्षव निषिक श्रयोग आऽ आचार्य गानरक स्मृति आश्रममे अक निषिक अतिविक्त किछ अन्वृष्टिक रजित होएरौक गप कहन गेन



श्रुति ।

एगावहम सन्नामे गानरँ आश्रिममे दल्लनीति पव चवचा निष्कृ होएरौक रौदो दक्षिण पाँचानक सत्तासदक आग्रह पव एतद सरँधी चवचा होएरौक गप श्रुति । बाजा शिनाजित द्वावा बाजपद प्रधान पुरोहितकेँ देरौक चवचा श्रुति ।

रौवहम सन्नामे भावत ह्यक्क रौद नियोग प्रथाक अमाद्य भन् रँद भन् जएरौक रौत श्रुति । शिष्यदेरक शिरदेरसँ एकाकावक चवचा सेहो श्रुति ।

तेवहम सन्नामेईरवाजक श्रुतिषेक उँसेरक चवचा श्रुति । दूरम्कित मंत्रमे

“ ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोवथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयसुखम् ” आन् दीर्घाहर्षिर् केव मेन शुक्ल यजूर्देदक २२/२२ मंत्रसँ कए दूरि श्रुत नए रिशेष नए तान गति यति मे गएरौक रर्णन श्रुति । अन्नरद सेहो मायानन्द जी देले छथि, जे त्रिद्विधक अन्नरदसँ प्रेषित श्रुति ।

समस्त रिश्वमे त्रौहण रिश्वक तेजक रचस्र स्थापित कवए रँना, सरँव, राण चएरौमे निष्ण, निरोगि, महावथी, शूव, यजमान बाजा सन्तक जन्म होए, सरँव अधिकधिक दूष दएरौनी धेनु होए, शिजिशानी रूषभ होए, तेजस्वी अश्व होए, कपरती सन्नी हरती होए, रिजयकामी रीवपुत्र होए, जखन हम कामना कवी पर्जन्य रर्षा देथि, रनस्पतिक रिवास होए, ँषधि फनरती आन् सभ प्राणी योगक्षेमसँ प्रसन्न बहथि । बाजन शितंजीरी होएथि ।

ईरवाजक श्रुतिषेकक नेन ३ मंत्र हाथमे श्रुत, अवरौ, त्रौहि आन् दूरदिन नए आन् मंत्र समाप्ति पश्चात बाजा पव एकवा डौठरौक आन् हेल दलीक मठकुवीसँ दली नए महाबाजक तान पव एहिसँ तिनक नगएरौक रर्णन श्रुति । एहि श्रुतवामे मायानन्द जी निथेत छथि, जे एहि मंत्रक, जकवा मिथिनामे दूरम्कित मंत्र कहन जागत श्रुति, बचना यात्ररके द्वावा राजसनेथी संहिताक नेन कएन गेन । एहि मंत्रक उपयोग मिथिनामे उपनयनक अरसव पव रँदकक नेन आन् रिवाहक अरसव पव रव-रधुककेँ आशीरचनक कपमे प्रहाज होए नागन ।

पुरोहितक अन्न होगत श्रुति उपसहावसँ । एतय रर्णित श्रुति, जे काशीक वस्तुक अर्नार्य ग्रामक आर्याकवण भेन आन् त्रारग्राम यत्र भेन । शिष्यदेराः पव चवचा श्रुति, शुनः शेष आख्याण आन् भावत कथाक कहरौक पवस्पवाक प्रावस्र आन् मगध द्वावा आर्य धर्मक प्रति रिश्रुतक चर्च सेहो श्रुति ।

(अन्नरतते)

३. उँपग्यास



सहस्ररौहनि - गजेन्द्र ठाकुर





नन्दक दूनु र्द्रेष्ठा रन्नामे श्रथम अर्द्रेत डनन्हि । किडु दिन धवि सभष्ठा ठीक-ठाक चर्द्रेत बहन । पुवनका सभष्ठा चिष्ठा-फिकिब नर्द्रेत डन जेना खतम भए गेन होए । गायक एक दू गौष्ठा सेहो पष्ठनामे बहेत डनाह । महिनामे एकष्ठा बरि निश्चित डन, जाहि दिन सभ गौष्ठा कतह् घुमए नेन जागत डनाह । एक बरि कोनो गौष्ठाक अर्द्रेष्ठा तँ कोनो आन र्द्रेव चिष्ठा याखानाक यात्रा । एक र्द्रेव चिष्ठा याखाना गेन बहथि सभ गौष्ठा तँ आकणि नन्दके पुडनखिन्ह- “हमवा सभ आयन डी चिष्ठा याखाना, र्द्रेवमे र्द्रेव नागन अडि र्द्रेवैनिकन गार्डेनक आं गेष्ठाक डुपवमे निखन अडि र्द्रेवैनाजिकन गार्डेन” ।

“पहिले सोनपुवमेना सभमे अर्द्रेष्ठा चिष्ठा सभक श्रदरुन होगत डन आं लोकरक जीह पव ओकवा नेन चिष्ठा याखाना शिष्ठा आरि गेन । दूदा एतए तँ कतक र्द्रेवामे र्द्रेव सभ नागन अडि, श्रुकर र्द्रेव पव ओकव नाम आं रनस्पतिश्रीमतीय रिरवण सेहो निखन अडि, आं ताहि द्द्वारे एकव नाम अर्द्रेवैनामे रनस्पति उद्यानक नेन र्द्रेवैनिकन गार्डेन पष्ठा गेन । दूदा र्द्रेवामे अर्द्रेव कएन गेन जे जन्तु आं रनस्पतिक रूपमे दू तवहक जीवरिज्जन अडि । एहि उद्यानमे रनस्पति, चिष्ठा आं र्द्रेव-सिह गवादि सेहो श्रदरुति अडि । ताहि द्द्वारे एकव नाम र्द्रेवैनाजिकन गार्डेन रा जैरिक उद्यान दए देन गेन । पुवनका र्द्रेव जतए-ततए बहिये गेन” ।

एक र्द्रेव सभ गौष्ठा गेन बहथि एकष्ठा गौष्ठाक अर्द्रेष्ठा । ओतए चर्चा चनए नागन जे गंगा पुन केव उड्ढाष्ठा दू तीन सानसँ एहि सान होयत, अर्द्रेष्ठा सान होयत एहि तवहक चवचा अडि ।

नन्दसँ ओं लोकरि पुडनखिन्ह, “अर्द्रेष्ठा र्द्रेवामे कहिया धवि एहि पुनक उड्ढाष्ठा भए जएतेक । दूख्यमन्त्री तँ कहने डथि जे एहि सान एकव उड्ढाष्ठा भए जएतेक” ।

“कहियो नहि होएतेक । दू-तीन सानसँ तँ सुनि बहन डियेक । यारत एकष्ठा पाया र्द्रेवैत डेक, तँ ओहिमे ततेक न र्द्रेव देने बहेत डेक जे किडु दिनमे दवावि पष्ठा जागत डेक । हेव वाता-वाती ओकवा तेषा कए हेवसँ नर पाया र्द्रेवनाग शुभ करैत जागत अडि” ।

गंगा पुनक चवचा सुनि नन्दक सोमाँ पाया पवसँ गंगार्द्रेवामे खसैत जेन-मजदुव सभक चिष्ठा नाचि जागत डनन्हि । नन्दक रिराद ओहि समय ठीकरेदाव आं सर्गि अर्द्रेवैना सभसँ काजक सर्द्रेवामे होगत बहेत डनन्हि । एकष्ठा पायाक कार्यक सर्द्रेवामे नन्द अपन रिराद श्रुकर कएने डनाह, किडु दिवका र्द्रेव ओं पाया हाष्ठा गेन, एकष्ठा पेष दवावि पष्ठा गेन डन र्द्रेवै-र्द्रेव । वाता-वाती ठीकरेदाव-अर्द्रेवैना लोकरि ओकवा तेषा र्द्रेवैन्हि । वातिमे कतह्सँ ओतेक रिराद पाया र्द्रेवै सकेत डन ? से अर्द्रेष्ठा दिन दवाविक स्थान पव तिवपान रिष्ठाओन गेन, जे ककरो नजवि नहि पष्ठा जाग ।

(अर्द्रेवैते)

(अर्द्रेवैते)

४. महाकाव्य

महाभावत -गजेन्द्र ठीकर(आर्द्रेव)

सैवन्धीक श्रुति भए श्रुष्ठा दूनु पसवन,

दूयेधिन डन र्द्रेवामे अर्द्रेवैनासक कथा,

डन ताकिमे तकराक पान्दरक पता,

डि ग्द्रेवैना सैवन्धीक लेखमे अर्द्रेवैना ।

पान्दर डन-लेख र्द्रेवैना डथि गार्द्रेवैना,

कीचकसँ अर्द्रेवैना वाजा त्रिगर्त देशक,

मिनि दूयेधिनसँ कए गौ-हवणक रिचाव



रिवाठ बाजसँ ७२ नेत रँदना खर ।

दुयेधिन नए संगं लीम, द्राण, धूप, कर्ण,

आहमण रिवाठ पव नए अम्रियोमा संग ।

त्रिगर्त बाज सुशर्मि घेबि गौ-रिवाठबाजक,

रौन्दि रिवाठकेँ जखन ७२सोमार्णं आयन ।

ननकावि कएन लीमकेँ सोब हधिप्रिब-कंक,

रल्लभ-लीम हथिक-नहन तत्रिपान-सहदेर ।

खोनि रँहन रिवाठक रौन्दि देन सुशर्मन्,

बृहन्नना रँनि सावथी पत्र रिवाठबाज उतमक ।

बथ खानन बण्मेत्र उतमहमाव लेन घरबायन,

गेन अर्जून शमी गाछ नग उतावि शिम्त्र आयन,

गान्डीर अम्भय त्पीव आनि पविचय सुनाउन ।

उतमहमाव रँनन सावथी बृहन्नना-अर्जूनक संग,

रेगशीनी बथ देखि दुयेधिन प्छन हे लीम ।

अत्रातरासक कान लेन पूर्ण रा न रा कछ,

लीम कहन पूर्ण तेवह रर्यक अरधि लेन ओ ।

अर्जून उतावन अपन रोष कर्ण पत्र रिकर्ण पव,

मावि ओकवा रँहन आगाँ कर्णकेँ रँधन सेहो ।

द्राण लीमक धनुष काठन मूर्छित कएन सेना सकन,

द्राण-धूप-कर्ण-अम्रियोमा-दुयेधिनक हकठ रम्त्र सभ,

उतमहमाव उतावन सल्लै गौ नए नगव तखन घुवन ।



मूर्छा ठूँठेन सलक जखन कहन कवरै हऊँ पुनः ,

भौम नहि मननाह दुर्योधन घूक रँह भेन खरिं अः ।

उत्तमकामाव नहि कवरै प्रगठ भेद हभव अर्जुन कहन,

रिवाठ भेन प्रसन्न रीवता सुनि उत्तमक खरिं घव ।

पथ पाल्दर द्रौपदीक तखन पविचय हुनका भेठेन,

प्रस्तार कएन पुत्री उतबाक रिवाह अर्जुनसँ कवरै ।

अर्जुन कहन पढ़ने छी हभव शिष्या अछि ओ२ बहन,

पुत्र अन्तिमगुसँ होयत रिवाहित उतवा अ प्रस्तार छन ।

ग्रह-बैनवाम द्वावकासँ रीवियाती अन्तिमगुक नए अएनाह,

उतबाक रिवाह अन्तिमगुक संग भेन रँह ठेप-ठेकावसँ ।

३. उद्याग पर

छनाह आएन बाजा बुन्द अन्तिमगुक रिवाह पव,

भेन बाजाक सभा जतए ग्रह कएन रिनती ओतए ।

तूत खेन शिकनीक अपमान द्रौपदीक कएन जे,

दुर्योधन छीनन बाजा हरिष्टिबक अधर्मसँ से ।

रौजू प्रयने बाजा-प्राप्तिक कोना होयत रा,

दुर्योधनक अवाचार सहत बहथू पाल्दर सतत ।



दुपद उठि कहन द्वाचावी कौबरकेँ सभ जनए छथि,

कर्तरा हमवा सभक थिक सहाय रानी पाँडर जनक ।

(खनुरते)

कथा



1. गगेशि गज्जन - गौरबक मूना

2. गज्जन्द ठाँवर- पठववाति



1. गगेशि गज्जन श्री गगेशि गज्जन(१९४२-)। जन्म स्थान- शिवखरौर, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पब पी.एच.डी.। कवि, कथाकार, नाटककार आ उपन्यासकार। मैथिलीक श्रथम टोरेटिया नाटक बुधिरधियाक लेखक। उचितरजा (कथा संग्रह) क लेन साहित्य अकादमी पुरस्कार। एकव अतिविकृत हम एकठा मिथा पविचय, लोक सुनु (कविता संग्रह), अन्ध- अज्ञात (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आंग बोठ (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलाचन की लोक कथाई, मणिपद्मक लैका- रनिजावाक मैथिलीसँ हिन्दी अन्ववाद आ शिङ्ग तैयाव है (कविता संग्रह)।

गौरबक मूना

भागनपुर मे एकठा उनठा पुन कहरैत छैक। उनठा पुनसँ दक्षिण झूँह जे सड़क जागत छैक, तकवा रौसी रोड कहन जागत छैक। रौसी रोड पब कएक ठाँ रस्तु-मोहन नगे-नग पड़ैत छैक। रहुत बास दोकान आ लोकक, ध्रुव-रस, ठमठम, बिकनी सभक खूँ घन आराजाली। सुखायन मोसम मे भवि ठेहन धूँवा आ भदरावि मे भवि ठेहन पानि-कादो। शहरी नाना सभक कारी गर्दगीसँ सड़क भवन-पुवन। कैंक समय तँ पयरे आयर-जायर कठिन।

झुदा सड़क छैक पीच। मोजाहिदपुर मिवजान हाँट टोक, हरीरपुर आ हुसनाबाद तथा अनीगज। कैंक जाति आ पेशाक लोक। काँठ गोदामसँ न क तसबक उद्यागी ध्रि आ जानरबक गधु तोड़ैत हल्लिक ठानसँ न क हबियर ठैका तबकारी सभक हाँट ध्रि। तहिना ठिक ठिक घोड़ासँ न क रइदोसँ रंभव ठैनासँ ड्यारीतोड़ श्रिम करैत घामे-पसेले तब मान उघेत मजूब सेहो। रंछा, सियाण सभक बीड़ भेठैत। कतहु दोकानमे नागन पफनकन कोरीक ड्युता जकाँ कतहु अनकतवाक उनठन पीपा जकाँ। आ दृथ थिक सड़कक दूनु कातक उनठा पुनसँ ता अनीगज।

अनीगजसँ किछु आगाँसँ सड़क खूँ पकठोस छैक। चिक्कन कारी। तेहन जे कैंक ठाँ परिवार ओहिपब मकै-गहम पर्यन्त पथाव द क सुथरैत भेठैत।

ओही गनाकाक एकठा घटना थिक। आने रीच सड़क पबक अनीगज रस्तु जत खतम होगत छैक ताही ठाम सड़कक कातमे एकठा आब कन छैक जे हबदम अरन्ड छेड़ै। जकाँ डबडवरैत बहेत छैक। यद्यपि भागनपुर मे पीरौक पानिक कर्ग, रंइ सामान्य रात अछि, झुदा एत पानिक उदावता देखिक से समझा अखरावी पफुसि रनि जागत छैक। थैब, ताछ दिन खूँ



तेजसिँ पानि छवडवा बहन छलेक । का भवनिहाव नहि बहेक । खुर रौद बहेक । चानि खापर्जा जकाँ तरेत । तेहन मन जे चानि पव यदि रैनिक रोठी धू देन जागक तँ पाकि जयतेक ।

एहना मौसम मे कनसँ सठने दस गोठे रूस गोठे खपन चानि तररेत यदि योनिमानि करैत ठाह हो तँ धान जायरँ स्नातारिके । हमरुँ खपनाकेँ रौद, नूँ खाँ उमसमे उनरैत पकरैत ओहि द क न जागत बही । एकठाँ उपयाज कावणँ बुँमायन सुस्तयराँक । भले किछ नोक

योँघाँउज क बहन छलेक । नगमे कनसँ ओतेक शराह सँ जन सहरि बहन छलेक से एकठाँ मनोरैत्रानिक शीतनता पसावि बहन छलेक मने ।

जखन ओहि गोन नग पहुँचनहुँ तँ ग़हो देखरी योग्य भेन जे ओहि योँघाँउजि मन्डनीसँ खाँगाँ एक ठाँ मिनी रूस ठाँह छेक । सन्दह नहि बहन जे कोनो दुर्घटना सँ पफवाक किछ राँत नहि छेक । एहन दुर्घटना मे सडकपव ककरो मूल सामाग्य राँत थिक । डेग खलेले किछ सठकि गेन । नग पहुँचनहुँ खाँ ओहि घरने योँघाँउजिक कन्हापवसँ हुनकि क देखनहुँ तँ रीचमे दू पथिया गोरब हेबायन रीच सडकपव । एक ठाँ छेँडँडँ हूँक-हूँक करैत... । योँघाँउजि खुरँ जेवसँ चनि बहन छन । ओही नोकक गोनमे एक कात करीरँ १०-१२ रँरक दूठाँ छेँडँडँी खाँदकेँ चूप ठाँहँ खाँ कलेत... खबकरी पहिले खूजन देह, छिष्टा मन केशी... । ओहिमे सँ एक ठाँ छेँडँडँीक जमरुँी नागन खर्गि ह मे पफाँठन सैठ, ताहिपव ठँठका गोरब नेभवन । दूँ छेँडँडँीक गानपव हाथमे, सौँसे देहपव गोरब नागन खाँ दुर्घटनाखुस्त छेँडँडँीक छातीपव गोरब नागन । दूँ ठाँ नाहि ठाँ हाथक छाप यद्यपि ओहि कडँ रौदमे सुखा गेन बहेक, रुँदा स्पष्ट, बहेक ।

खाँदकमे पडनि दूँ छेँडँडँी, खँदाज करैत छी, गोरबरिछनी छेक । राँठ-घाँठ जागत खरैत गाय-महीसक गोरब जमा खडि, भवि दिन तक गोगठाँ थोपेत खडि, माय राँ पविरावक काँ नोक तकवा सुखरैत खडि खाँ रँडका पथियामे सजाक शिहव जाक रैठेत खडि । जीरिकाक एक साँहन येह गोगठाँक खाँदनी । गोगठाँ जाहिँ रँनय से गोरब खाँरय कतसँ एहिना खनिश्चित । कहियो एको पथिया कहियो किछ ले । तेँ एहि सडकपव गोगठाँ रिछनी छेँडँडँी सलक खाँपस मे होगत मोठाँ-मोठाँक दूँथ रँडँ खाँम घठना बहेत छेक । खाँ ओकवा माय-राँप केँ गाँवि-सवाप देनक, ओ ओकवा माय रँहिनकेँ योँह सँ रियाह करौनक... एकहि दिन पहिले दूँठाँ छेँडँडँी रीच सडकपव तेना पठकम-पठकी करैत बहय खाँ एक दोसवाक मोठाँकेँ तेना लोचि बहन छन जे दयाँ खाँ फ़ाँ दूँ खाँरय मनमे, रुँदा समाधन की । गोरब जकव जीरिका छेक ताहि पवक आपहक तँ ठीके ले सहन हेतेक ओकवा ताँहमे एक दिन हम एकठाँ छेँडँडँी केँ पडले बहिँक-+तोवा सिनी केहने एना नगडँी करै छेँ, जवी ठाँ गोरब केँ राँडँ ? '

- +जवी ठाँ छले ? एतना छले, हन्ना जमा कवी क वखनिँ खाँक ग़ाँ बधिया मोठकी-धूँ मी ले खपने छिष्टामे खी नेनक । खाँय हमरा केतना मावते माय ? माय तँ ग़हे ले कहते जे हन्ना गोरब नहि रीछय छनिये, कही दिन भव खेनी बहन छनिये ? की खयते नोर्गे ? '

हमव श्रम हमरे खुरँ भारी चमेठी जकाँ बुँमायन, हम चोष्टि ससवि गेन बही ।

रुँदा ओहि दिनुका दूँथ रँडँ भारिक छलेक । खाँदकेँ चूपचाप दहो-रहो कलेत दूँ छेँडँडँी एक रँव चाक कातक नोककेँ एक रँव शोषित रँहते रँचाकेँ देखेत ठाँहँ बहेक ।

- +की होले भाग जी ? ' हम एकठाँ सज्जनसँ पुँडनियनि ।



- +खरे कनिशग छौं भाग जी । रंतारं जवरी ठा गोरब के रासु एकवा सिनी मे थापसे मे नगड । होले थक हो छौं डी एकव छौं भागके ० धकेनी देनके मिन रंसके थगुमे । देथे ले छले जे घड ी मे दम ठुंठन छे छौं डी के थाना...

- +जवरी ठा गोरब छले उह ? माय किविया था के कली तँ नडमिनियाके ० जे हमव एक चोत गोरब छनय कि ले ? ' थचानक जेना थुरं साहस करैत थानकित एक ठा छौं डी कनिते राजनि-

हमवा थकसात लोकसभपव थसक ओली भाग साहेरपव फाधु उठन ।

- +रिचित्रा रात तोवा की नहि देखाग बहन छ जे ग रूतक मवि बहन दे था थस्पतान पहुँचारे के पिहकिव ले कवीक दरकि रैनन थरु छ थिक्काव । '

सभ जेना हमरेपव थस्व नागन ।

- +थारं की ग रूच पाडते ? की पफयदा नय गेनासँ । '

- +तेथो ले जायमे की हजा ? भाग-साहेरं ठीके तँ कली बहन छे हो । ' एक गोठे थपन रिचाव देनकेक ।

हदा तक कोनो थयोजन नहि भेलेक । थोन-पहचक्का मचिते बहलेक, ओ दनु गोरबवरिडनी छौं डी थानके ठाडि ए बहन लोकसँ थेवायनि । रूच रूठपव ओहि थान ननाक थान छुठि गेलेक । एक चवहक पानियो ले देनके का ।

एहि सदर्भमे एकठा लेखकक ठिप्पणी थस्तार करैत छी जे ग दृथ छन एकठा नहि, केकठा गोरब पव जिनहाव पविरावक रूचक संघर्षक । एक रूठिन ककरो एक चोत गोरब चोवा नेनके तँ तामसमे ओ चोलौनिहावक छौं डी भागके ० सडकपव धका द देनके था मिनरंस ओकवा पीचि देनके । पीचपव शोषित था गोरब रंवारंवि दामक भेन जे रौदमे सुथागत बहलेक ।

रौसी रोडक ग दृथ जे देखने होयता सह रूमने होयता - एतरे कहरं ।

हमवा तँ गहो नहि रूमन थडि जे हगन छौं डी क मायो-रूप छलेक कि नहि ? छलेको तँ ओकवा कथन थरंवि भेन होयतेक जे ओकव रेठि मिनरंसमे पिचा क मवि गेलेक । रा मिनरंसक ड्रागरव कोन थानामे जाक कहने होयतेक जे हम एकठा निवीह छौं डी के ० थून क क थारं बहन छी ?

हमवा तँ नहि रूमन थडि ओहि दनु छौं डी थो क, हदा ओहि घटनाक रौदसँ मनमे एहि रूतक थदेशी थरंथ होगत वहेत थडि जे कतह दनु छौं डी पफेव ले एहि रौसी रोडपव गोरब रूठेते भेठि जाय... कतह पफेव ले भेठि जाय ।

था, सन पूछी तँ थारं हमवा सभठा गोरब रिडनी एक्क वग नसेत थडि ।

2.. गजेन्द्र ठाकुर-

पहववाति



“सुनू । प्रयोगशानाक प्लिच ऑफ कए दियोक” । चाबि डागमेशनिक रातारवणामे अपन सभठा द्वि आऽ त्रि डागमेशनिक रसुक प्रयोग कवरक लेन धोमा प्रयोगशानामे प्रयोग शुक कवए रँना छथि । हुनकर संगी-साथी सभ उमेकतासँ सभठा देखि बहन छथि ।

“दू डागमेशनमे जीरँए रँना जीर तीन डागमेशनमे जीरँए रँना मनुक्क सभ कार्यकेँ देखि तऽ नहि सकैत छथि, ह्मदा ओकर सभठा पविणामक अन्तर करैत छथि । अपन एकठा जीरन-शीरक ओऽ निर्माण कएने छथि । ओहि पविणामसँ नररुका रारस्था कएने छथि । तहिना हमबा लोकनि सेहो चाबि डागमेशनमे बहए रँना कोनो समारित जीरक, रा ङ कछ जे तीनसँ रँशी डागमेशनमे जिनहाव जीरक हस्तक्षेपकेँ चिन्हक प्रयास कवर” । धोमा कहैत बहनाह ।

एक आऽ दू डागमेशनमे बहनहावक दू गोठे प्रयोगशानाक सफलताक रौद धोमाक ङ तैसव प्रयोग छन ।

“एक रिमीय जीर जेना एकठा रिन्दू । रँचामे ओऽ पढैत छनाह जे रेखा दू ठाँ रिन्दूकेँ जोड़ैत छैक । नहि तऽ रिन्दूमे कोनो चोड़ ङ देखा जागत अछि आऽ नहिये रेखामे । रेखा नमगव बहैत अछि, ह्मदा रिन्दूमे तँ चोड़ ङक संग नमग सेहो नहि बहैत छैक । एक रिमीय रिन्दूमे मात्र अर्गाँ आऽ पाछाँ बहैत अछि । नहि अछि रान दहिनक रौध नहिये डुपव नीचाँक । मात्र सबन रेखा, रफता कनियो नहि । आरँ ङ नहि रँमि निख जे अहाँ जतय रँसन छी, ओतए एकठा रेखा रिचवण कवए नागत । रवण ङ रँमु जे ओऽ रेखा मात्र अछि, नहि कोनो आन रहिः ।

“द्वि रिमीय ब्रँह्मन्ड लेन जतए आगू पाछुक रिहाय राम दहिन सेहो अछि, ह्मदा डुपव आऽ नीचाँ एतए नहि अछि । ङ रँमु जे अहाँक सोमाँ बाखन सितनपाठीक सद्देशे ङ होयत, जाहिमे चोड़ ङ रिगमान नहि अछि । “

“ ह्मदा श्रीमान् ङ चलेत अछि कोना । गप कोना कवत एक दोसबकेँ सदेशे कोना देत” ।

“आऽ । पहिले एक रिमीय ब्रँह्मन्डक अरनोकन करैत छी” ।

धोमा एक रिमीय प्रयोगशानाक नग जागत छथि । ओतए रिन्दू आऽ रिन्दूक सम्मिलन स्वरूप रँनन रेखा सभ देखरामे अरँत अछि । ङ जीरँ सभ अछि । एक रिमीय ब्रँह्मन्डक जीर, जे एहि तथामे अनिभित्त अछि जे तीन रिमीय कोनो जीर ओकरा सभकेँ देखि बहन छैक ।

“देखू । ङ सभ जीर एक दोसबकेँ पाव नहि कए सकैत अछि । आगू रँहत तँ तरत धवि जाऽ धवि कोनो रिन्दू रा रेखामे ठेकर नहि भए जएतेक । आऽ पाछाँ हँत तारत धवि यारत हेल कोनो जीरसँ तँठै नहि होयतेक । एक दोसबकेँ सदेशे सेहो मात्र एकहि पकिन्तमे दए सकत, कावण पकिन्तक राहव किछ नहि छैक । ओकर ब्रँह्मन्ड एकहि पकिन्तमे समाप्त भए जागत अछि ।

“आरँ चनु द्वि रिमीय प्रयोगशानामे” ।

सभ का पाछाँ-पाछाँ जागत छथि ।

“एतय किछ बमण चमन अछि । पहिल प्रयोगशाना तँ दू तहसँ जाँतन छन, दू दिशिसँ आऽ डुपवसँ सेहो । मात्र नमग अन्त धवि जागत छन । ह्मदा एतय डुपव आऽ नीचाँक सतह जाँतन अछि । ङ आगू पाछाँ आऽ राम दहिन दू दिशि अन्त ठवि जा बहन अछि । ताहि हेतु हम दू प्रयोगशानाकेँ पृथ्वाँक डुपव स्तव नभमे रँनओने छी । एतकरा जीरकेँ देखू । सितनपाठी पव किछओ रँना दियोक । जेना छोट रँचा रा आधुनिक चित्रकाव रँनरँत छथि । एतय ओऽ सभ शकाव लेठि जायत । ह्मदा उँचाँक त्रान एतए नहि अछि । एक दोसबकेँ एक रँवमे मात्र रेखाक रूपमे देखैत अछि ङ सभ । दोसब कोणसँ दोसब रेखा आऽ तखन स्वरूपक त्रान करैत जागत अछि । नमग आऽ चोड़ ङ सभ कोणसँ रँदनत । ह्मदा रूताकाव जीर सेहो होगत अछि । जेना देखू ओऽ जीर राम कातमे । एक दोसबकेँ सदेशे ओकरा नग जाऽ कए देन जागत अछि । पैघ समूहमे सदेशे प्रसावित होयरामे हँव समय नागि जागत अछि” ।

“श्रीमान्, की ङ सभर अछि, जेना हमबा सभक सोमाँ बहरो उँतव ओऽ सभ हमबा लोकनिक अस्तित्वसँ अनिभित्त अछि तहिना हमबा सभ सेहो कोनो चाबि आऽ रँशी रिमीय जीरक अस्तित्वसँ अनिभित्त होयि” ।



“है तकले चर्चा आऽ प्रयोग कबरौक हेतु हमवा सभ एतए एकत्र भेन छी । अहाँले सँ चाबि गोठे हमवा संग एहि नर कार्यक हेतु आबि सकैत छी । अ योजना कनेक कर्तनाह छैक । कतेक सान धरि अ योजना चनत आऽ पविषाय कहिया जाऽ कए भेटैत, तकब कोनो सीमा निधरिषा नहि अछि” ।

पाँच ठाँ रिद्यार्थी द्यैतकेतु, अपाना, सलकाम, बैरू आऽ घोषा एहि कार्यक हेतु सहर्ष तैयाब भेनाह । द्यैय पाँचू गोठेकेँ अपन योजनामे सम्मिलित कए लेनहि ।

“चाबि रौमीय रिद्यैमे तीन रौमीय रिद्यैसँ किछ अन्तुव अछि । तीन रौमीय रिद्यै भेन तीन ठाँ नम्लाग, चोइ गऽ आऽ गहवाग द्वाद एहिमे समयक एकठौ रौम सेहो सम्मिलित अछि । तँ चाबि रौमीय रिद्यैमे आकि पाँच रौमीय रिद्यैमे समयक एकसँ श्रेणी रौमक सम्भारना पब सेहो रिचाब कएन जायत । द्वाद पहिले चाबि रौमीय रिद्यै पब हमवा सभ शोध आर्गाँ रूइ यावँ एहिमे मूनतः समयक एकठौ रौम सेहो बहत आऽ ताहिसँ रौमक संख्या पाँच भए जायत । समयकेँ मिनकए चाबि रौमक रिद्यैमे हमवा सभ जरीर बहन छी । जेना रर्षि अक्षरतासँ अस्मित लोककेँ नान आऽ हवियबक अन्तुव नहि बुझि पड़ैत छैक, ओहिना हमवा सभ एकठौ श्रेणी रौमक रिद्यैक कल्पना कए सकैत छी, अक्षरम्भ अन्तुव सेहो कए सकैत छी” । द्यैय रँजनाह ।

सभा समाप्त भेन आऽ सभ का अपन-अपन श्रकोशमे चलि गेनाह । सिद्धांतिक शोध आऽ तकब रौद ओकब प्रायोगिक प्रयोगमे सभ गोठे नागि गेनाह । त्रिभुज धवातन पब र्थेचि कए एक सय अस्सी अक्षिक कोश जोइरि कए रँनएरौक अतिविकत पृष्ठाकाब आप्रतिमे खेचन गेन त्रिभुज जाहि मे श्ररूक रेखा एक दोसवासँ नरँ अक्षिक कोश पब बहैत अछि, द्वाद रेखा सोम नहि छैठः बहैत अछि । ओहिना समय आऽ स्थानकेँ तैठ भेना पब एहन सँभर भए सकैत अछि जे हमवा सभ श्रकाशिक गतिसेँ ओहि मार्गे जाग आऽ पुनः घुबि आरौ । श्रकाशि सूर्यक नगसँ जागत अछि तँ ओकब बस्ता कनेक रँदनि जागत छैक ।

द्यैतकेतु आऽ बैरू एकठौ सिद्धांत देनहि— जेना कर्तलेखरौ काठमे रुक्ममे खोह रँनरैत अछि, तहिना एकठौ समय आऽ स्थानकेँ जेइएरौना खोहक निर्माण शुक भए गेन । अपाना एकठौ त्रैलालक डोबीक निर्माण कएनहि, जकवा रौहि कए शकानि रा ओइसँ श्रेणी गतिसेँ उइरौक सम्भारना छन । सलकाम एकठौ एहन सिद्धांतक सम्भारना पब कार्य शुक कएन छनाह, जकब माध्यमसेँ तीन ठाँ स्थानिक आऽ एकठौ समयक रौमक अतिविकत कताक आब रौम छन जे रूइ नयू छन, छैठ छन आऽ एहि तबहै रँडमान रिद्यै नगभग दस रौमीय छन । घोषा स्थान समयक माध्यमसेँ भूतकानमे पहुँचरौसँ पूर्व देशिक रिधिमे अ पबिरँडन कबरौक हेतु कहनहि जाहिसँ कोनो रैत्रानिक भूतकानमे पहुँचि कए अपन रा अपन शत्रुकेँ जयसँ पूर्व नहि माबि दए । घोषा रिद्यैक निर्माणमे भगरानक योगदानक चचा करैत बहैत छनीह । जौ रिद्यैक निर्माण भगरान कएनहि, एकठौ रिश्काठ द्वाबा, आऽ एकवा सापेक्षता आऽ अनिश्चितताक सिद्धांतक अन्तुवना छैरि देनहि रँडरौक जेन, तँ ह्येव समयक चाती तँ हनके हाथमे छहि । जखन ओ चारहाह ह्येवसेँ सभठौ शुक भए जायत । जौ से नहि अछि, तखन समय स्थानक कोनो सीमा, कोनो तँ नहि अछि, तखन तँ अ त्रैलाल अपने सभ किछ अछि, रिद्यैदेर, तखन भगरानक कोन स्थान ? घोषा सोछैत बहनीह ।

आरौ द्यैयक जेन समय आरि गेन छन । अपन पाँचू रिद्यार्थीक सभ सिद्धांतकेँ ओऽ प्रयोगमे रँदनि देनहि । आऽ आरौ समय आरि गेन । पहबवाति ।

पुष्पक रिमान तैयाब भेन स्थान-समयक खोहसेँ चनरौक जेन । त्रैलालीय डोबी रौहि देन गेन पुष्पक पब । द्यैय सभसेँ रिदा जेनहि । श्रकाशिक गतिसेँ चनन रिमान आऽ खोहमे स्थान आऽ समयकेँ छेइ करैत आर्गाँ रूइ गेन । त्रैलालक केन्द्रमे पहुँचि गेनाह द्यैय । पहबवाति रौतन छन । आर्गाँ काबी गहव सभ एहि समय आऽ स्थानकेँ छेइ कएन खोहमे चनए रँना पुष्पकक सोमसेँ अपन सभठौ भेद बाधि देनक । डोबका पहबक पहिले द्यैयक रिमान पुनः पृष्ठा पब आरि गेन । द्वाद एतए आरि हनका रिद्यै किछ रँदनन सन नगनहि । द्यैतकेतु, अपाना, सलकाम, बैरू आऽ घोषा का नहि छनाह ओतए । रिमानपंथी सेहो रँदनन सन । रिद्यैमे समय-स्थानक पंथी सभ भवन पड़न छन ।

“यो । समय रँताड कतेक भेन अछि” ।

“कोन समय । सोम रँना रा स्थान-समय रिस्थापन रँना । सोम रँना समय अछि, सन् ३५०० मास...” ।

ओऽ रँजिते बहि गेन छन द्वाद द्यैय सोचि बहन छनाह जे स्थान-समय रिस्थापनक पहबवातिमे हजार सान रातीत भए गेन । ककवा रँतओताह ओऽ अपन ताकन बहस । आकि एतुका लोक ओऽ बहस ताकि कए निश्चित तँ नहि भए गेन अछि ?

३. पद्य

1.



मैथिली कैकु पद्य- बरीन्दनाथ ठाकुर सेहो कैकु निखन्हि, ऋदा मैथिलीमे पहिन रैव जापानी पद्य रिधाक आधाव पव "रिदेह" प्रस्तुत कए बहन अछि आ रिधा ।

2.

अ.पद्य रिम्भूत करि स्र. श्री वामजी चौधरी (1878-1952)



अ.पद्य ज्ञाति ना चौधरी

अ.पद्य गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली कैकु

कैकु सौंदर्य आ२ भारक जापानी कारा रिधा अछि, आ२ जापानमे एकवा कारा-रिधाक रूप देनहि करि मासुओ रूसो १७४४-१७९४ । एकव बचनाक नेन पवम अन्वभूति आरथक अछि । राशो कहने छथि, जे जे का जीरनमे ३ सँ ३.० ठाँ कैकुक बचना कएनहि से छथि कैकु करि आ२ जे दस ठाँ कैकुक बचना कएने छथि से छथि मरकरि । भावतमे पहिन रैव १९१९ अ. मे करिब बरीन्दनाथ ठाकुर जापानसँ घुवनाक बाद राशोक दू ठाँ कैकुक शाब्दिक अन्ववाद कएने बहथि ।

प्रबनोप्रह्व
रंगेवनाह
जनेव शिद्ध

आ२

पचाएडानि
एकठाँ के

शिवकोर ।

कैकुक नेन मैथिली भाषा आ२ भारतीय संस्कृत आश्रित निपि रावस्था सराधिक उपह्वक अछि । तमिन छोट्टी शेष सभठाँ दक्षिण आ२ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ२पूर्वी भारतीय निपि आ२ देरनागरी निपि मे रैह स्रव आ२ कचरतप राङ्गन रिधान अछि जाहिमे जे निखन जागत अछि सैह राजन जागत अछि । ऋदा देरनागरीमे द्रव्य 'अ' एकव अपवाद अछि, आ निखन जागत अछि पहिने, ऋदा राजन जागत अछि बादमे । ऋदा मैथिलीमे आ अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अच्छि' आ राजन जागत अछि अ द्रव्य 'अ' छु रा अ अ छु । दोसव उदाहरण निख- वाति- वा अ त । तँ सिद्ध भेन जे कैकुक नेन मैथिली सर्रोतम भाषा अछि । एकठाँ आव उदाहरण निख । स्रि संस्कृतक विशेषता अछि ? ऋदा की अंग्लिमे स्रि नहि अछि ? तँ आ की अछि- आगम गोगणु ठूराडर्सदण्ड । एकवा निखन जागत अछि- आग एम गोगणु ठूराडर्स द एण्ड । ऋदा पाणिनि धुनि रिज्ञानक आधाव पव स्रि निखन रैव नहि, ऋदा अंग्लिमे निखरी कानमे तँ स्रि पानन नहि होगत छैक, आग एम केँ उना आगम हेलेनेठिकनी निखन जागत अछि, ऋदा रजरी कान एकव प्रयोग होगत अछि । मैथिलीमे सेहो यथासंभर रिभक्ति शिद्धसँ सठाँ कए निखन आ२ राजन जागत अछि ।

जापानमे अश्रिबक आनन ठनका/ राका प्रार्थना ३. १ ३. १ १ स्रकपमे होगत छन जे बादमे ३. १ ३. आ२ १ १ दू नेखक द्वावा निखन जाए नागन आ२ नर स्रकप प्राप्त कएनक आ२ एकवा बेला कहन गेन । बेलाक दवरी स्रकप गाँठिरीय ओहने छन आ२ रिन गाँठिरीय रैना स्रकप रशिकरआक नेन छन । राशो रशिक रआ रैना बेला बचनहि । बेलाक आवस्य होकुसँ होगत छन आ२ कैकाग एकव कोनो आन पकिउकेँ कहन जा२ सकैत छन । मसाओका सिकी बेलाक अलुक घोषणा कएनहि १९म शताब्दीक प्रावस्यमे जा२ कए आ२ होकु आ२ कैकाग केव रैदनामे कैकु पद्यक समन्वित रूप देनहि । ऋदा राशो प्रथमतः एकव स्रतंत्र स्रकपक निर्वाप कए गेन छनाह ।



हेकु निखम १. ११ अक्षरबमे निखु, आ२ अ तीन पक्तिबमे निखन जागत अछि- ३. १ आ२ ३ केव फममे । बचना निखरासँ पहिने सुँभमे मात्रिक छन्दक रर्षन फममे हम निखले बही जे संयक्तबमेकेँ एक गानु आ२ हनबुक/ रिकारीक/ अकार आकार आदिक गणना नहि कक ।

हेकु निखम २. रांग्य हेकु पद्यक रिषय नहि अछि, एकब रिषय अछि भूत । जापानमे रांग्य आ२ मानर दूरनताक नेन शयङ रिधारकेँ "सेगु" कहन जागत अछि आ२ एहिमे किरेजी रा किणो केव राकवण रिबाम नहि होगत अछि ।

हेकु निखम ३. प्रथम ३. रा दोसब १ धनिक रौद हेकु पद्यमे जापानमे किरेजी- राकवण रिबाम- देन जागत अछि ।

हेकु निखम ४. जापानमे निगक रचन भिन्नता नहि छेक । से मैथिलीमे सेहो रचनक समानता बाखी सह उचित होएत ।

हेकु निखम ५. जापानमे एकहि पक्तिबमे ३. १ ३. धनि देन जागत अछि । ऋदा मैथिलीमे तीन धनिखन्दक नेन ३. १ ३. केव तीन पक्तिबक प्रयोग कक । ऋदा पद्य पाठमे किरेजी रिबामक ,जकवा नेन अर्धरिबामक चेह प्रयोग कक, अतिबिबन्त एकहि श्वासमे पाठ उचित होएत ।

हेकु निखम ६. हेबुन एकठा यात्रा बृतात अछि जाहिमे संक्षिप्त रर्षनामेक गद्य आ२ हेकु पद्य बहेत अछि । राशो जापानक रौह भिष्क आ२ हेकु करि डनाह आ२ रेह हेबुनक प्रणेता छथि । जापानक यात्राक रर्षन ०२ हेबुन द्वारा कएने छथि । पाँचठा अन्नदद आ२ एतरहि हेकु केव डुपबका सीमा बाखी तखने हेबुनक आमो बस्मित बहि सकैत अछि, नीचाँक सीमा १ अन्नदद १ हेकु केव, तँ बहरें कवत । हेकु गद्य अन्नददक अन्तमे ओकब चवमक कपमे बहेत अछि । - सप्पादक

प्रस्तुत अछि ज्यातिक १३. ठा मैथिली हेकु । हनकब १७ सँ १०० धरि हेकु अछेजीसँ मैथिलीमे सप्पादक द्वारा अन्नरादित अछि, तकब अछेजी अनी सेहो देन गेन अछि । तकवा रौद गजेन्द्र ठाँकबक १२ ठाँ हेकु आ२ एकठा हेबुन देन गेन अछि ।



ज्यातिकेँ www.poetry.com सँ सप्पादकक चाँयस अर्वाड (अछेजी पद्यक हेत) भेटन छन्हि । हनकब अछेजी पद्य किछ दिन धरि www.poetrysoup.com केव ऋथा पृष्ठ पब सेहो बहन अछि । ज्याति मिथिला चित्रकनामे सेहो पार्वगत छथि आ२ हिनकब चित्रकनाक प्रदर्शनी अविग अर्वाड श्रुप केव अतन्नात अविग अँडरे, नडनमे प्रदर्शित कएन गेन अछि ।

ज्याति ना चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९१४; जन्म स्थान -रैल्लराव, मधुवनी ; शिक्षा- स्नामी विरेकानन्द मिडिन स्कूल टिक्का साकरी गर्स हाइ स्कूल, मिसैज के एम पी एम अन्टव काजेल, अन्दिवा गान्धी उपन युनिरसिटी, आंग सी डरनु ए आंग (काँस्ट्र) एकाडर्शनी); निवास स्थान- नन्दन, यू.के.; पिता- श्री शर्कब ना, जयशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा ना, शिरीपट्टी । "मैथिली निखराक अन्नास हम अपन दादी नानी भाइ रैहिन सबकेँ पत्र निखराकेँ कएने छी । रँडसँ मैथिलीसँ नगार बहन अछि । -ज्याति

(१)

तावा दूरसँ

रूमागत कतेक शीतन

रासुरमे जङ्गत

(२)

शाखासँ नागन

प्रसप आ२ प्रसप आ२ आछादित



श्रद्धि स्मृतेत नता

(३)

पम्फ्री रिश्रीय कएन

रैडका यात्राक उपवात्र

एथनो जे अपूर्ण

(४)

अदन्तत अपराद डैक

नागहनीक काँठक रीच

असुम थिनायन

(३.)

नीनारिबमे मेघ

रिचरेत श्रद्धि कोना जेना

सागबमे होए शार्क

(३)

भारी संकठ केव

पशु पम्फ्रीमे पुरातिस

प्रान्तक दिरा आशिष

(१)

रौमन पशुड ी

सुगहक संग सजाउन

एक पुष्पक कपमे

(+)

नदीक तबंग

ओहिना नागेत श्रद्धि जेना

ओकब घुबयन केशी

(९)



दृ ठा पसवन पाँथि

रौज उँरुन नन तेयाव खँडि

पूँि कपसँ जागकक

(१०)

पहाडूीक ठनान

ताहि पव एकमात्र गाडक छार

भेल यात्रीक रिश्राम

(११)

संध्याक रेंना

सुनसान आर शान्त पोखविक कात

एक एकान्त स्थान

(१२)

मेघ कपी रँरुमे

खँडि हरागु जहाज पिछुँत

आकाशमे रिचरैत

(१३)

कठौवतम भूमि

समुद्रक छेव पव रँसन

खँडि पाखवक किनाव

(१४)

रिनम्फा अपराद

आकाश जरैत संधाकान

समुद्रक उपरि

(१५)

पहाडूँ उँदित



सूर्यसं श्वाकशि भेन जागृत

झानाङ्गथी सन

(१७)

उगैत सूर्य संगे

आयन अंधकावक उपवान्त

अतलीन दिनक आस

(१९)

दिरस आरै थकन

वातिक स्यागतमे नीन साँस

मिन्नागत सूर्य दीप

(१५)

गाङ्ग भने हबियब

श्रीश्यामे देख् पतनरु

भोवक आकाशिमे

(१६)

पम्मीक चलक

आ२ आकाशिक नानी संग

अप्रुति जागन

(२०)

अतिसुन्दर जाङ्ग

मेघक घिस घिस छिड़योनक

हिमपातक रूपमे

(२१)

तेयाव उड़हनैन

पम्मी रिश्यामसं जागन

रा अछि शुकखात



(२२)

पम्मीक निवीम्फण

डूठन खन्नक हेलवमे

कठनी तेनाक बाद

(२३)

हूनक डूजक रौम

शाखा के न्का बहन

रंसंत आयन खडि

(२४)

तितनीक पथ

खकित बग रिबग आकाव

प्रभुक चिक्कना

(२५)

मन्नम जेन कठिन

किन्नू जीरन ओतह खडि

शीतनतम स्थान

(२६)

उच्चतम शिखरसँ

धूम्र भवन हवियव घाटी

निहावक गड्डा

(२७)

रिभिन्न प्रकारक

घास पात जमीन पव उगन

आगवसँ दूब रँ चन ।

(२८)

ओसक बूँद पारि खडि



घासक हूनगी खानादित

हीवा मन चमकैत

(२९)

रौहव घूम२ निकनन

रैतख अपन रैचा संग

गर्मीक दिनमे

(३०)

रैतख हेन बहन खडि

पानिक डूपवी सतह पव

नम्हाक दिस निर्वतव

(३१)

सप्रेसो

खान्द पिरै नैन

गर्म देन गेन

(३२)

अम्बिब केँ तकनाग

नहि कठिन पारुँ ओकवा

परिव्र द्वादयमे

(३३)

दृष्टि भ्रमणमे

घाटी पव दूब दूब धवि

भठकि सकैत खडि

(३४)

योड १ भठकि बहन

उद्धखलीन रिन घुइसराव

लेन खबुशीसनलीन



(३३)

शिव पानिमे

अधुनिक अतिरिच्य

साह नैकिन उमठौ

(३७)

प्राधुनिक दृष

पानिक अतिकप रिना

अपूर्ण बुनागत अछि ।

(३९)

पतमडक पात

पसावनक अम्पन मतबंजी

हवियव घास रदना ।

(३५)

सम्पदक तहमे

रिभिन्न आकाव प्रकावक

बंग रिबंग जीरन ।

(३६)

नठ-थठ सम्पद

तठक आवायसँ रचित

कएने रैव रैव तंग ।

(४०)

पहाडक चोटी

आव रैसी ऊँच नागैत अछि

गहँव घाँकी रीच

(४५)

पोखविमे देखु



प्रश्रुतिक श्रुतिरिन्न

उनठन रूमागत अडि

(४२)

तितनीगण उतवन

पंथकपी पौराश्रुष्ट न२

हूनक नूड पव ।

(४३)

उचतम शिखव पव

गुहनासँ दृष्टिगोचव

होगत वमणीय दृष्य

(४४)

रँचाक संग खेनमे

एकैठौ थुशीक आभास

उकव किनकावी

(४३.)

ठैर मेर बेखा अडि

रँवसातक रँहैत पानिसँ

थिङ्ककीक काँच पव रँनन

(४७)

रौदनसँ डनन

समूद्रक नहबिक तर्बग

उपव चयकैत किबण

(४१)

पानिक तर्बग कै

पम्फ्री रँदनि बहन अडि

कनवरक नयमे



(४+)

मबन्धनमे रेत

श्रद्धि हरामँ रँहावन

सतह भेन समतन

(४६)

कतेक रँसौ धान

पातक प्राकप देरँहमे

श्रद्धिब देले छथि

(३.०)

रँवसात खतम भेन

पानि तगयो मरि बहन श्रद्धि

गाढक पात सरँ स२

३.१

सम्भद्रक नहवि

नगाताव ठँकवा बहन

पाखव तगयो द्विब

३.२

मनोबम दृष्य

जेना चिल्लिक चशिनीमे निपु

श्रद्धि गाढ जाइमे

३.३

अपने बंगहीन श्रद्धि

गाढ केँ बंगीन रँनौनक

नीचा गइन जइनि

३.४

शीतन प्रकाशि हाऊ



सुर्योदयक पहिलेक समय

सरोत्तम कान

३.३.

पाँथिक शान ओइने

प्रकृतिक ज्ञमण हेत

पम्फ्री निकनन जाइमे

३.७

चिटेय एक रँचा

माथ रौप संगे खडि तारैए

जारैए पंथ नहिक छैक ।

३.१

श्ररसी पम्फ्री

मीनक मीन उँडि क खायन

गर्मीक खानन्द नय ।

३.४

उँडनैत पानि

नदीसँ तैँठ नैन

खसन सबनाक कपमे ।

३.६

नागफणीक गाछ सब

मकसुख सेहो खडि

मजबूतीसँ ठाँइ ।

३०

कठौव पातसँ निपु

नागफणीक चोटी पव खडि



कौमन हूनक तज

७१

श्राव सजायन गेन

कैक बंगक हून श्रा२ नागठसँ

फिमसक साँममे

७२

एक नाबिकेवक हन

कठौव केशिजाऊ करचमे

माँठ उञ्जव हन अछि

७३

भुखाएन रँगना

नदीक कातमे ठाँह अछि

माँडक तकिमे

७४

अतिथिक आगमन

कौआक कर्कशि काँर काँरसँ

पूरूमूचित भेन अछि

७५

सागबमे डाँनखिन

खतबनाक जीरक रीचमे

मन्नसक साथी

७६

जिग जोग धुनि कै

गाँह ी दोहवा बहन अछि

भौजन सङ्क पव

७७



लुकस्पक त्राप थुडि

थुडुत थुपवाधक सजा

मनुषकेँ भेठैन

७+

छोठ किनु तेज थुडि

थुपन नम्य चिनहमे

भडन भुडक रीच

७६

समुद्रक नीचाँ

कतउ जायकान बहथ

छोठ माछ सरं नुडमे

१०

थुगुवक हन थुडि

मीठ जेन जमाक२ बखने

छोठ छोठ थुकावमे

१५

सुन्या सदुशे दुथ

हवियव प्राधुतिक संग

चिडु थुकाक कनवर

१२

वाति हुथक पहिले

थुकाशि दहकि बहन

सुयुक्तिक पहिले

१३

थिनथिनागत सबना

मधुव धुनि थुोवि बहन



चाक दिशामे

१४

सूर्यक अथनापव

वातिक अन्हाव भागि गेन आं

भोव शुक भं गेन

१३.

द्वया उपर्हाज अन्ति

गौरवद्वता केँ उगं

आं पसवं जेन

(१७)

एकठा पठनाक रौद

खबहा हेलव भागि बहन अन्ति

आव भोजन जेन

(११)

गाढक स्पर्मि बंग

पतमङ्कक आगमनक

योषणा अन्ति करैत ।

(१४)

गवमीक अन्ति

कहाँ ओतेक दूखद अन्ति

शुक्क दिनमे

(१६)

स्वयम् सिद्ध मकवा

अपन स्वबन्ना हेत

जान अन्ति बुनैत



(+०)

क्रोनो अकावमे

ठनि जाधत पानि ऋदा गहवाङ्ग

एकव अपन गुण

(+१)

आकाशि अथलो डूँच

रौदन पहुँचमे रूमाएन

ङ्ग धुक्क कपमे

(+२)

बातिमे गजोत दैत

रुहिसँ पवाररिचित होगत

प्रकाशिपुँज जाइमे

(+३)

बुबुखी सरँ निकनन

अपन घरसँ खानस लागि

रसनु भुत्तुमे

(+४)

सोन सन सूबज तेन

डुङ्गब चमकैत तीवा सन

दिनकेँ अएना पव

(+३.)

गाढ सरँ अछि होइमे

सरसँ पहिले पारँ नैन

सूबजक रोशिनी

(+७)

एकठाँ मन्दिर अछि



खजूबक गाछ भिइमे

एक पोखरि कातमे

(+१)

सुखाएन छोट पातसभ

गाछसँ नीचाँ खसित खिछि

नरकैँ खरसब दैत

(++)

गाछक शाखासभ

खतेक डुँटाग पब पसबन

जइ ततइ गहिब

(+६)

भोबक खयना पब

गाछ पब नादन ओस भेन खिछि

चमकैत हँसी सन

(६०)

सोन सन कयन खिछि

ओहने गहमक खेत सभ

कठौगक पहिले

(६५)

चक्ररातीय परन

जीवनसहाबक रनि गेन

जीवनबम्कक डन ।

(६२)

प्रदान करैत खिछि

पम्की खाइ हिवग सभकैँ

गाछ खाइ बूझ खाशिय



<http://www.videha.co.in/> मानुषीमिह संस्कृतम्

(९२)

हूनसँ भवन अछि
एकटा घाँटी एहन अछि
जेना खुशी झुकागत ।

(९४)

पानि रँहनि बहन
बस्तुक गाछ आऽ पाथव सल
रिदा करैत ठाह

(९३.)

जाइक गाछ अछि ठाह
रसनुक प्रतीक्षामे
पात सभसँ भिन्न भऽ

(९७)

Illusion of eye
Colourful appearance of
Rainbow in the sky

आँखक भ्रम,
आभास रंगमय
पनिसोखा छौ

(९१)

Rainbow declares
Beginning of bright days and
End of rainy ones

पनिसोखाक,
शुभ्र दिन आरँह



<http://www.videha.co.in/> मानुषीमिह संस्कृतम्

थिचारनि जाः

(७+)

Filled with smoky fog

The wood seems to be burning

Thou' it is winter

धूँआ फलेस

जेना जड़त काठ,

अडि अ जाड़

(७७)

The words sound so sweet

imitated by parrots

Like baby babbl es

गुण मध्व

सुग्गाक अडिनय,

तोतवागत सुव

(१००)

The sky is bright

The wind has cleared the clouds

Some still needs force

अकाशि ह्यैत

बाय ठालैत मेघ,

कलेक रैन

(७७ सँ १०० धरि अङ्ग्लिसँ मैथिली अनुवाद संपादक द्वारा कएन गेल)

गजेन्द्र ठाकुरक १२ ठी कैकु

१. रास मौर्या,



मोजव बर्रंधन

पन्नर ब्रुतां

१. योडन डडा.

वेतन खूबचन

मोडक सक्रा

३. कोगनी पिक्री,

गिदवक निवेठ

वाकशे खान

४. दुपतबिया

तुतली गाडोक

सधने द्योस

३. सबली फन

कनयी खाम-गाडो.

उगवरौले

७. कोनपति खा२

चोकवक ठान.

गडपक्कु ठा

१. नम्पा तोडन

गोवन उंसवणि

रौरोक सावा

†. तीतीक खेन

सतघबिया चानि

खगोक-रैया

६. कनसुपती.

उगधक गेन्द खा२

जुडि शीतन



१०. यावां थरौड

डकलीक मड्डेड

उडहा जावि

११. करैंग सला

चानी लौकवि माठि,

करैफेडरौ

१२. गौलीक-मोस,

काँठे ओकव नहि

रिधक नेन

तेवून १

सोमार्ग संभावप्रबक नेनरे-सडक पुन । ११+१ सन् । नममा देनक कमना-रैनानक पानिक धाव, रौडि क दृष्ट । हेव थरैत छी डहव नग । हमवा सोमार्गे एकठामसँ पानि उगडुम होगत नममात रौहव थडि थरैत । हेव ओतएसँ पानिक धाव काठे नगेत थडि माठि । रडह नगेत थडि पानिक थराह, थरैत थडि रौडि । घुवि गाम दिशि थरैत छी । हेनीकाँपठवसँ थसत थडि सामथ्री । जतए थायन जनक थराह ओतए सामथ्रीक थसेरौ नए स्वथाएन उरैरै तूमिखड थडि रड खोड । ओतए थडि जन- समर्द । हेनीकाँपठव देखि भए जागत थडि योन । थपघातक थडि डव हेनीकाँपठव नहि थसरैत थडि ओतए थाह्यन्न । रडि जागत थडि आगाँ । थसरैत थडि सामथ्री जतए पानि रिन्न पडत छन दूर्डिम्क, रौडि सँ भेन थडि पठैनी । कावण एतए नहि थडि थपघातक डव । आँथिसँ हम ग्रा देखन । ११+१ ग्रा ।

पएरे पाव

केने कमना धाव,

थाग रिशान

रिस्यूत करि सु. वामजती चौधरी (1878-1952)पव शोध-लेख रिदेहक पहिन थकमे ग्रा-थकाशित भेन डन । तकव रौद हनकव पुत्र श्री दुर्गानन्द चौधरी, ह्याम-कद्रपुव,थाना-थधवा-ठाठ १, जिना-मधुरनी करिजीक थथकाशित पाल्डुनिपि रिदेह कायनिथकेँ डकसँ रिदेहमे थकाशिनार्थ पठौनहि थडि । ग्रा गोठ-पचासेक पद्य रिदेहमे एहि थकसँ धावाराहिक कसेँ ग्रा-थकाशित भ बहन थडि । रिस्यूत करि- पं. वामजती चौधरी(1878-1952) जन्म स्थान- ह्याम-कद्रपुव,थाना-थधवा-ठाठ १,जिना-मधुरनी. मुन-पगुन्नाव बाजे गौत्र-शक्तिन ।

जेना शैकवदेर थसामिक रँदना मैथिलीमे वचना वचनहि, तहिना करि वामजती चौधरी मैथिलीक थतिविकुत ब्रँजबूनीमे सेहो वचना वचनहि । करि वामजतीक सभ पद्यमे वागक रर्ण थडि, ओहिना जेना रिद्यापतिक नेपानसँ थ्राप्ट पदारनीमे थडि, ग्रा थभार हुकव रौरी जे गरैया डनाहसँ थ्रेवित रूमना जागत थडि । मिथिनाक लोक पछुदेरुपासक डधि द्वाद शिरानय सभ गाममे भेटि जायत, से वामजती चौधरी महेन्नी निथनहि थ्र चैत मासक हेतु रूमवी थ्र लोबक भजन (पवाती/ थ्रभाती) सेहो । जाहि वाग सभक रर्ण हनकव ध्रतिमे थरैत थडि से थडि:

१. वाग रेखता २. नारणी ३. वाग सपताना ४.वाग ड्युपद ५. वाग संगीत ६. वाग देशे ७. वाग गौवी ८.तिवहूत ९. भजन रिनय १०. भजन डेवरौ ११.भजन गजन १२. हौनी १३.वाग थ्याम कर्याण १४.करिता १५. डम्क हौनी १६.वाग कागु काहनी १७. वाग रिहाग १८.गजनक रूमवी १९. वाग पारस चोमासा २०. भजन थ्रभाती २१.महेशरणी थ्र २२. भजन कीर्तन थ्रदि ।

मिथिनाक नोचनक वागतवर्गिणीमे किड वाग एहन डन जे मिथिने ठामे डन, तकव थयोग सेहो करिजी कएनहि ।

थसुत थडि हनकव थथकाशित वचनाक धावाराहिक थसुति:-



14.

महेश्वरानी

रिधि रैङ्ग दूः ख देन,

गौरी दाग के एहेन रव कियक निधि देन ॥

जिनका जाति नहि हन नहि पविजन,

गिबिपव रंसधि खकेन,

डमक रैजारधि नाचधि खपन कि भूत श्रेत से खेन ॥

भस्त्र खंग शिव शोभित गंगा,

चन्द्र उदय डनि भान

रस्त्र एकोठा नहि डनि तन पव

डुपवमे डनि रैगडान,

रिषधव कतेक खंगमे नठकन,

कठ शोभे हडमान,

बामजी कियक सखेडी येना

गौरी सुख कवती निहान ॥

15.

रिहाग

बृन्दारन देधि निख चहुव ॥

काली दह रशीरठ देखू,



रुंज गनी सभ ठौब,
सेरा रुंजमे ठाकव दर्शन,
नाचि लिख एक लेब ॥
जहना तठमे घाँ मलोलव,
पथिक बहे कत ठौब,
कदम गाँडके नूकन देखु,
चाब धरे रहू ठौब ॥
बामजी लेकथं बृन्दारन
घूमि देखु सभ ठौब,
बासमल न के शोभा देखु,
बहू दिसस किडु ँव । ।

16.

रिहाग

मथुवा देखि लिख सन ठौब ॥
पथेन के जे घाँ रैनन खडि,
रहूत दूब तक शोब,
जहना जीके तीबमे,
सल्ल बहथि कते ठौब ॥
खसुँ धातुके खसुँ देखु,
रिजनी ररे सभ ठौब,
सल्ल रीहमे सुन्दर देखु,
रौब भेठत रहू हूब ॥
दूनु रंगनमे नाना शोभे,
पथेन के हू जेब



कंशबाजके कीना देखु

देरकी रौ रसुदेर ॥

चापूव ऋष्टिक योह्का देखु

कर्रजा के घब गुब,

बाधा हस्तके मन्दिव देखु,

दाँड मन्दिव गौब ॥

डोड रिभाग

बामजी मधुर्न, घूमि निख खर,

हस्त रसुथि जेहि ठौब ॥

गौहन नन्द यशोदा देखु

हस्त म्नाड एक रैब ॥

17.

मलेशीरानी

भोना केहेन भेजौँ कठौब,

एक रैब ताकू हमबहूँ ओब ॥

भस्त्र खंग शिव गंग रिबाजे,

चन्द्रभान डुरि जेब । ।

राहन रसहा बद्रमान गब,

भूत-त्रेतसँ खेन ॥

त्रिभुवन पति गौबी-पति मेरो जेँ ने हेबर एक रैब,

तौँ मेरो दूःख कउन हबखत



सहि न सकत जतीर मोव ॥

रैडटे दयाब्र जानि हम खयनहूँ,

खलौक गेवण सुनि शोव,

बाम-जती खत्रिण आय प्रकारो,

दिजए दबस एक रैव ॥

(खन्नरतते)

ग.पद्म ज्योति सा चौधरी



ज्योतिके www.poetry.com संपादक चॉयस खरार्ड (खहोजी पद्यक लेख) भेटन छहि । हुनकब खहोजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केब दूथा पृष्ठा पब सेहो बहन छि । ज्योति मिथिना चित्रकनामे सेहो पाबगत छथि आ२ दिनकब चित्रकनाक श्रदरिणी जनिग आर्ट हुप केब खतस्रात जनिग जौडरे, नडनमे श्रदरिगि कएन गेन छि ।

ज्योति सा चौधरी, जय तिथि -३० दिसम्बर १९७५; जय स्थान -रैलराव, मधुरनी ; शिक्षा- स्नामी रिकेकानन्द मिडिन स्कूल टिक्का साकरी गर्स हाइ स्कूल, मिसैज के एम पी एम गर्टव कानेर, गन्दिवा गाँव ओपन युनिरसिटी, आग सी डरनू ए आग (कॉम्प्ट एकाउण्टेन्टी); निरास स्थान- नन्दन, यू.के.; पिता- श्री शर्कब सा, जमशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा सा, शिरीपणी । "मेथिनी निखरौक खस्रास हम खपन दादी नानी भाग रैलिन सबके पत्र निखरौमे कएले छी । रैडसँ मेथिनीसँ नगार बहन छि । -ज्योति

मेघक_उपोत

कनिक कान द२ पालिक हुहाव

हेव नैनक खपन आँजूव सन्हावि



देखू मेघक ँपोत

लोकक ँशिक ँपहास करैत

कखनो दर्शन द२ रैब-रैब ब्रकागत

मौना२गेन गाड ँ२ पात

कखनो गवजि भवि क२ बहि गेन

कखनो रैबसि-रैबसि क२ भवि गेन

दूरैन पौखविक कात

कौसीक श्रराह सरै रौँह तौडनक

गायक गाय जनमग्न कएनक

ततेक भेन रैबसात

किसानक भरिष्य मेघपव ँश्रित

मेघक गडा पूर्ति: ँश्रवाश्रित

सलसानक ँनिश्चित ँन्नपात



गजेन्द्र ठाकुर

पथक पथ

स्रुतिक रैङ्गनमे

तरेगणक पाडसँ

खन्हाव गद्वबक सोमामे

पथ रिकठ । ँशिसँ ।



पथक पथ तारकं ह्य
प्रयाण दीर्घं भेन आरं ।

रिश्नैक शहेनिकाक
तोड्ड भेटि जायत जौ
गतिहासक निर्माणक
कूट शिद्ध तारकं ठाँ ।

पथक पथ तारकं ह्य
प्रयाण दीर्घं भेन आरं ।

रिश्नैक मथनमे
लोपत किड्ड रंहाव आरं
सम्पद्रक मथनमे
अनज्ञान डन रसु-जात

पथक पथ तारकं ह्य
प्रयाण दीर्घं भेन आरं ।

7. संस्कृत शिक्षा च

मैथिली शिक्षा च (मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - लघुमन्त्रः उद्गरान- मानुषीमिह संस्कृतम्)

(आगाँ)

-गजेन्द्र ठाकुर

स्वभाषितम्

रयम् गदानीम् एकं स्वभाषितं श्रुमः ।



आयल गणदोषतः

तदाल्ल श्चिप्रनिश्चयः ।

अतीते कार्यशेषतः

रिपदा नाभिभूयते ॥

रयम् गदानीम् यत स्वभाषितम् श्रुतरत्तः तस्य अर्थः एरम् अस्ति ।

कश्चन उतुतम् कार्यकर्ता कथं रारहारं करोति । भरिष्यत् काले यत् कार्यं कवणीयम् । कार्यस्य गणाः के अरगणाः के गति सः चिन्तयति तदाल्ल श्चिप्रनिश्चयः । यदा कार्यं सल्लिहत् भरिष्यति तदा अरगणां निर्णयं करोति । अतीते कार्यशेषतः यद् कार्यं शिष्टं भरति, तस्य किम् गति चिन्तयति, एरं यद् कार्यम् अतीतम् अस्ति तत्र किम् शिष्टम् गति चिन्तयति- रिपदा नाभिभूयते ।

कथा

पूरुं वायगढ द्वाग् असीत् । शिराजी महाबाजः तस्य पाननं करोति अ । एका महिना आसीत् । सा प्रतिदिनं श्चिबरीक्यणं करोति अ । वायगढ द्वाग् अस्तुः आगल् श्चिबरीक्यणं करोति अ । तस्याः नग् पुत्रः आसीत् । तम् गृहे तिङ्गरा द्वाग् अतः आगल् श्चिबरीक्यणं करोति अ । प्रतिदिनम् अंधकावत् पूरुं श्चिबरीक्येणं समापयित् ररिहिः आगच्छति अ । एकस्मिन् दिने सा श्चिबरी क्येणं करीति आसीत् तदा रिनग्जः जातः । अंधकावः जातः । यदा महिना श्चिबरी क्येणं समाप्य द्वाब समापम् आगतरती- तदा द्वाग् द्वाब पिहितम् आसीत् । सा तद्दृष्ट्वा वक्कररुठम् उङ्गरती- द्वापया द्वाबम् उद्घाटयत् । मग् शिपुः गृहे अस्ति । वक्कररुठः द्वाबम् उद्घाटयत् निवाप्ततरान् । पुनः सा महिना प्रार्थितरती । वक्कररुठं सा प्रार्थितरती- द्वापया उद्घाटयत् । अहं ररिहिः गच्छामि । गृहे मग् नग्-शिपुः अस्ति । तस्य भोजनं दातराम् अस्ति । द्वापया उद्घाटयत् । भरान् किमर्थं न उद्घाटयति । सा पुष्ट्तरती । वक्कररुठः उङ्गरान्- शिराजी महाबाजस्य सूचना अस्ति । अंधकावस्य अनन्तुवं द्वाबस्य उद्घाटनं न कवणीयम् । गति । तद् श्रुत्वा सा महिना दिग्भ्राता जातः । अहम् गदानीम् गृहं कथं गच्छामि । सा तत्रैर माग् अल्लक्षणं द्वातरती । सरुत्र अठितरती । एकत्र द्वाग् अतिः शिथिना आसीत् । सा महिना अतिम् आकहरती । पाद्वै एकः वृक्कः आसीत् । वृक्कस्य शाखां गृह्णित्वा उतिर्य सा कथमपि द्वाग् ररिहिः आगतरती । अनन्तुवं दिने शिराजी महाबाजः एतां रार्तां श्रुतरान् । सः ताम महिनाम् आछतरान् । ताम सः पुष्ट्तरान् । भरती कथं गतरती । तदा सा उङ्गरती । अहं किमपि न जानामि । तदा मग् कर्णयोः केरनं मग् शिशोः कन्दनं श्रुयति अ । अहं कथमपि द्वाग् ररिहिः गतरती । तत् श्रुत्वा शिराजी महाबाजः संतुष्टः अन्तरत् । तस्य महिनायै सः पावितीषिकं दत्तरान् ।

सम्भाषणम्

एकरचनतः ररिहरचनं श्रुति पविररुठनं द्वातम् अस्ति ।

रानकः रिग्यानयं गतरान् । रानक रिग्यानय गेनाह ।

रानकाः रिग्यानयं गतरत्तः । रानक नोकनि रिग्यानय गेनाह ।



गदानीम् एकरचनतः रंहरचनं प्रति परिवर्तनं करन्ति एर ।

हरकः योगाश्वासं प्रतरान । हरक योगाश्वास कएनहि ।

हरकाः योगाश्वासं प्रतरन्तः । हरक लोकनि योगाश्वास कएनहि ।

नर्तकः नृत्तं प्रतरान । नर्तक नृत्त कएनहि ।

नर्तकाः नृत्तं प्रतरान । नर्तक लोकनि नृत्त कएनहि ।

खनसं निद्रां प्रतरान । खनसो निद्रा कएनहि ।

खनसाः निद्रां प्रतरन्तः । खनसो लोकनि निद्रा कएनहि ।

सैनिकः जयं प्राप्तरान । सैनिक जय प्राप्त कएनहि ।

सैनिकाः जयं प्राप्तरन्तः । सैनिक लोकनि जय प्राप्त कएनहि ।

रौनकः ग्रन्थं स्मृतरान । रौनक ग्रन्थ यदि कएनहि ।

रौनकाः ग्रन्थं स्मृतरान । रौनक लोकनि ग्रन्थ यदि कएनहि ।

रौनिका पाठं पठितरती । रौनिका पाठ पढ़नहि ।

रौनिकाः पाठं पठितरन्तः । रौनिका लोकनि पाठ पढ़नहि ।

रौनिका रिद्यानयं गतरती । रौनिका रिद्यानय गेनीह ।

रौनिकाः रिद्यानयं गतरन्तः । रौनिका लोकनि रिद्यानय गेनीह ।

रौनिका चिकिसोनयं गतरती । रौनिका चिकिसोनय गेनीह ।

रौनिकाः चिकिसोनयं गतरन्तः । रौनिका लोकनि चिकिसोनय गेनीह ।

सखी नगवं गतरती । सखी नगव गेनीह ।

सख्याः नगवं गतरन्तः । सखी लोकनि नगव गेनीह ।

लेखिका लेखं निखितरती । लेखिका लेख निखनहि ।

लेखिका लेखं निखितरन्तः । लेखिका लोकनि लेख निखनहि ।

भगिनी गानं गीतरती । रंहिन गीत गओनहि ।

भगिन्नाः गानं गीतरन्तः । रंहिन लोकनि गीत गओनहि ।

नर्तनी नृत्तं प्रतरती । नर्तकी नृत्त कएनहि ।

नर्तनीः नृत्तं प्रतरन्तः । नर्तकी लोकनि नृत्त कएनहि ।

अहं वामायणं, महाभारतं, भगवद्गीतां च पठामि ।



हम बायाया, महाभावत आह भगवतगीता पढेत छी ।

अहम् अन्न, पायस, नड्डक च खादायि ।

हम अन्न, पायस आह नड्ड खागत छी ।

सुब्रह्मण्य नेखनी, कवरसर्प च आनयतु ।

सुब्रह्मण्य कनमथ आह कमान आनू ।

सुब्रह्मण्य नेखनी, कवरसर्प च नयतु ।

सुब्रह्मण्य कनमथ आह कमान नए जाडु ।

मम गृहे माता, पिता, भ्राता च सन्ति ।

हमव गृहमे माता, पिता आह भ्राता छथि ।

भरतः गृहे के के सन्ति ।

अहाँक गृहमे के के छथि ।

भरवाः गृहे के के सन्ति ।

अहाँसभक गृहमे के के छथि ।

भरवाः किम् किम् खादन्ति ।

अहाँ सभ की की खागत छी ।

भरवाः काँ काँ भाषाँ जानन्ति ।

अहाँ सभ कौन कौन भाषाँ जनेत छी ।

भरभ्रतः किम् किम् करीन्ति ।

अहाँ सभ की की कबित छी ।

भरती किम् किम् करोति ।



थहाँ की की करैत छी ।

गदानी भरतु: च योजयिन्ना राक्यानि रदन्ति एव ।

थाम् रदाम: ।

थहँ चेलै नगव, झुल्लंग नगव, दिल्ली नगव च दृष्टुरान ।

हम चेलै नगव, झुल्लंग नगव थाम् दिल्ली नगव देखनहँ ।

थहँ चेलै नगव, झुल्लंग नगव, दिल्ली नगव च दृष्टुरती ।

हम चेलै नगव, झुल्लंग नगव थाम् दिल्ली नगव देखनहँ ।

भरतु: किम् किम् दृष्टुरतु: ।

थहाँ लोकनि की की देखनहँ ।

थभियेक: कौनारहन करौति- थत: थहँ ताडयामि ।

थभियेक कौनारहन करैत छथि- ताहि द्वारे हम मारैत छियहि ।

मम र्हँ पिपासा थत: थहँ जन पीरौमि ।

हमवा र्हँ प्यास नागन थछि ताहि द्वारे हम जन पिरैत छी ।

मम र्हँ र्हँतुम्हा थन्ति, थत: भोजन करौमि । हमवा र्हँ तुथ नागन थछि, ताहि द्वारे भोजन करैत छी ।

राहनै र्हँधन नास्ति, थत: राहन न चनति । राहनमे र्हँधन नहि थछि, ताहि द्वारे राहन नहि चनैत थछि ।

थत: - उपयोगं प्रन्ना राक्यानि रदन्ति एव ।

गोपान: कण्ठ: थन्ति, थत: स: शाना न गच्छति ।

गोपान दू: थित थछि, ताहि द्वारे पाठशाना नहि जागत थछि ।



गोपानः कणः अस्ति, अतः निर्दा करोति ।

गोपान दूःखित अस्ति, ताहि द्वारे अस्तेत अस्ति ।

गोपानः कणः अस्ति, अतः चिकिसोनयं गच्छति ।

गोपान दूःखित अस्ति, ताहि द्वारे चिकिसोनय जागत अस्ति ।

गोपानः कणः अस्ति, अतः न एीडति ।

गोपान दूःखित अस्ति, ताहि द्वारे नहि खेनागत अस्ति ।

मंत्री आगच्छति, अतः कार्यक्रमः भवति ।

मंत्री अस्तेत अस्ति, ताहि द्वारे कार्यक्रम होगत अस्ति ।

मंत्री आगच्छति, अतः सर्वे तम नयन्ति ।

मंत्री अस्तेत अस्ति, ताहि द्वारे सभ हनका नमस्काव करेते अस्ति ।

मंत्री आगच्छति, अतः सर्वे उद्विग्नन्ति ।

मंत्री अस्तेत अस्ति, ताहि द्वारे सभ उद्विग्नन्ति ।

परीक्षा अस्ति, अतः छात्राः निर्दा न करन्ति ।

परीक्षा अस्ति, ताहि द्वारे सभ छात्र निर्दा नहि कविते अस्ति ।

परीक्षा अस्ति, अतः सर्वे छात्राः शाना आगच्छन्ति ।

परीक्षा अस्ति, ताहि द्वारे सभ छात्र पाठशाला अस्तेत अस्ति ।

परीक्षा अस्ति, अतः रयं सर्वे अधिकः पठामः ।

परीक्षा अस्ति, ताहि द्वारे सभ छात्र अधिक पढते अस्ति ।

उसैरः अस्ति, अतः अहं सम्यक् मध्वं खादामि ।

उसैर अस्ति, ताहि द्वारे हम रहत बास मध्व आगत अस्ति ।

उसैरः अस्ति, अतः सर्वे जनाः उस्केः भवन्ति ।

उसैर अस्ति, ताहि द्वारे सभ लोक उस्के होगत अस्ति ।

उसैरः अस्ति, अतः सर्वे जनाः देवानयं गच्छन्ति ।



ऊँसेर अछि, ताहि द्वारे सब लोक देरानय जागत छथि ।

मम हस्तु नानकम् अस्ति । हमव हाथमे पाग अछि ।

नानकम् राम हस्तु अस्ति रा दक्षिण हस्तु अस्ति रा ?

पाग राम हाथमे अछि आकि दहिन हाथमे अछि ?

बदन्तु । राजए जाई ।

राम हस्तु । न दक्षिण हस्तु ।

राम हाथमे । नहि दक्षिण हाथमे ।

नानक राम हस्तु एर अस्ति ।

पाग राम हाथमे अछि ।

अहं चायम् एर पिरामि ।

हम चाहेँ पिरैत छी ।

मम पिता कार्यालय एर अस्ति ।

हमव पिता कार्यालयअहि मे छथि ।

अहं सबमेर रदामि ।

हम सबेँ ठी रजेत छी ।

अहं प्रातः रोस्टिका खादामि ।

हम भोबमे सोहारी खेत छी ।

अत्र एर योजयिद्वा राका रदन्ति एर- यथा अहं प्रातः एर रोस्टिका खादामि । सायंकाले खादन्ति । न । मध्याह्नकाले खादन्ति । न ।

मानती । अयम् । मम उपनेर्षं क्व अस्ति ।

मानती । है । हमव चम्पा कतए अछि ।

तत्रैर अस्ति । ओतहि अछि ।

अत्र क्वैपि नास्ति एर अत्र ।

एतए कतह् नहि अछि ।

तत्रैर अस्ति भः ।



उतहि अछि, यो ।

अत्र नास्ति एर । एतए नहि अछि ।

अहं जानामि भोः । तत्रैर अस्ति ।

हम जनेत छी । उतहि अछि ।

अत्र नास्ति एर भोः ।

एतए नहि अछि ।

अहो पथतु । अत्रैर अस्ति ।

अहो । देखु । एतहि अछि ।

अहं प्रतिदिनं शोर्ना गच्छामि ।

हम सभ दिन पाठशाला जागत छी ।

अहं न श्रुतरान । सः किम् गति उञ्जरान ।

हम नहि स्मनहूँ । ३२ की रँजनाह ।

सः अहं प्रतिदिनं शोर्ना गच्छामि गति उञ्जरान ।

३२ हम सभ दिन पाठशाला जागत छी अ रँजनाह ।

सा किम् गति उञ्जरती ।

३२ की रँजनीह ।

सा वया प्रतिदिनं देरानयं गच्छति गति उञ्जरती ।

३२ वया प्रतिदिनं रिशानय जागत छथि अ रँजनीह ।

अहम् एकं शिद्धं निखामि ।

हम एकठा शिद्ध निखेत छी ।

अहं किम् गति निखितरान ।

हम की निखनहूँ ।

भरान् पवीष्ठा गति निखितरान ।

अहो पवीष्ठा अ निखनहूँ ।



सः कर्णे किम् रदति ।

उ२ कानमे की रजेत छथि ।

एषः अहं शोना गछामि, गति उंज्रान ।

अ हम पाठशाना जागत छी, अ रजनाह ।

साधयतु अथरा रिनशुत, गति महामो गांधी उंज्रान ।

कक रा मक अ महामो गांधी रजनाह ।

(कः किम् गति उंज्रान ।

के की रजनाह ।)

अहं पत्राणि प्रदर्शयामि ।

शरीव माथां अन्न धर्म साधनम् गति कानिदासः उंज्रान ।

शरीव मात्र धर्मक साधनक माधाम अ कानिदास रजनाह ।

जय जरान जय किसान गति नान रंहाद्व शोमत्री उंज्रान ।

जय जरान जय किसान अ नान रंहाद्व शोमत्री रजनाह ।

गृहे माता अस्ति । माता समक पठतु गति रदति ।

गृहमे माता छथि । माता मोनसँ पढ़् अ रजेत छथि ।

मम माता अधिक दूबदर्शन न पठतु गति उंज्रती ।

हमव माता रेशी दूबदर्शन नहि देख् अ राजन/ रजनीह ।

मम पिता सँ रद गति उंज्रान ।

हमव पिता सँ राज् अ रजनाह ।



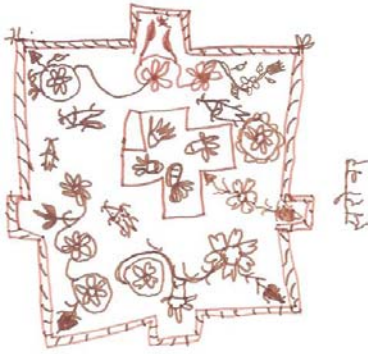
गृहे खग्य के के किम् रदन्ति गति रदत्त ।

घबमे खान के के की की रैहते छथि से रोजू ।



†. मिथिना कना (खागा) शीमति नम्मा ठाकुर, उय 60 बरष, ग्राम- हँठी-रानी, जिना मधुर्नी ।

नीचाँक चित्र खँगनाक पश्चिममे रैनन कन-देरताक घब जे 'गोसाँनि घब' कहरैत अछि, ओतए रैनाओन जागत अछि । पश्चिम देरान पब काबी छोड़ि दोसब बंगसँ अ चित्र रैनाओन जागत अछि । एकरे सरोरब कहन जागत छेक ।



लक्ष्मी कृष्ण

खनुरते)

९. पारनि संस्कार तीर्थ

डिक्करबी आँह मिथिना

१.गौरी-शकब स्थान- मधुर्नी जिनाक जमथवि गाम आँ हँठी रानी गामक रीच अ स्थान गौरी आँ शकबक सम्मिलित मूर्ति आँ एहि पब मिथिनाकबमे निखन पानरशीय अत्रिनेखक काबसँ रिलेख कपसँ उल्लखनीय अछि । अ स्थन एकमात्र पुवातन स्थन अछि जे पूर्ण कपसँ गामक उमोही कार्यकर्ता लोकनिक सहोयोगसँ पूर्ण कपसँ रिकसित अछि । शिरवात्रिमे एहि स्थनक चूचूरी देखरी योग्य बहते अछि । रिदेखेबस्थानसँ २-३ किनोमीटर उतव दिनामे अ स्थान अछि ।

२.डीठ-भगरानपुव अत्रिनेख- बाजा नाचदेरक पुत्र मल्लदेरसँ संरक्षित अत्रिनेख एतए अछि । मधुर्नी जिनाक मधेपुव ठानामे अ स्थन अछि ।

३.हनासपष्टी- मधुर्नी जिनाक हनपवास थानाक जागेपुव स्थान नग हनासपष्टी गाम अछि । काबी पाथवक रिङ्गु भगरानक मूर्ति एतए अछि ।

४.पिपवाली-लोकला थानाक पिपवाली गाममे रिङ्गु मूर्तिक चाक हाथ भङ्ग भए गेन अछि ।

५.मधुर्न- पिपवालीसँ १० किनोमीटर उतव नेपानक मधुर्न गाममे चतुर्भुज रिङ्गु मूर्ति अछि ।

६.खंधवा-ठाँक ीक स्थानीय राचम्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यम्किपीक भरा मूर्ति एतए बाखन अछि ।



१.कमनादिह स्थान- अर्धवा ठाठ १ गामक नगमे कमनादिह स्वनक रिछु मदिह कणाँटि बाजा नागदेरक मदी श्रीधर दास द्वावा स्थापित भेल ।

४.संसावधुव अन्नमन्डनक बखरौबी गाममे बुझ नीचाँ बाखन रिछु मुर्ति, गांधावशीनी मे रँनाउन गेन अछि ।

५.पजेरौगठ रनही ठेन- एतए एकठाँ बुझ मुर्ति भेठेन डन, द्दा ओकव आरँ कौनो पता नहि अछि । अ स्वन सेहो बखरौबी गाम नग अछि ।

१०.दुसहवनीयाँ डीह- अर्धवा ठाठ १सँ ३ किलोमीठेव पश्चिम पसृन गाम नग एकठाँ डुँच डीह अछि । बुझकानीन एकजनीयाँ कौठनी, रौझकानीन मुर्ति, पांग, रँडनक टुकड़ १ आँ पजेरौक अरशेष एतए अछि ।

११.भगीवधुव- पन्डीन नग भगीवधुव गाममे अन्तिनेथ अछि जाहिसँ ओगनराव रशिक अन्तिम दू शीसक वामभद्रदेर आँ नम्नानीथक शशीसनक रिषयमे सूचना भेटैत अछि ।

१२.अकौव- मधुरनीसँ २० किलोमीठेव पश्चिम आँ उँतवमे अकौव गाममे एकठाँ डुँच डीह अछि, जतए रौझकानक मुर्ति अछि ।

१३.रनिवाजधुव किना- मधुरनी जिनाक रौरुरवही शखुडसँ ३ किलोमीठेव पूरँ रनिवाजधुव गाम अछि । एकव दक्षिण दिशीमे एकठाँ धुवान किनाक अरशेष अछि । किना सौन किलोमीठेव नमगव आँ आँध किलोमीठेव चाकव अछि । दस ह्रीठक मोठ देरौनसँ अ येवन अछि ।

१४.अधुवगठ किना- मिथिनाक दोसव किना मधुरनी जिनाक पूरँ आँ उँतव सीमा पव तिनहगाँ धावक कातमे महादेर मठ नग ३.० एकड़मे पसवन अछि ।

१५.जयनगव किना- मिथिनाक तेसव किना अछि भावत जेपान सीमा पव प्राँचिन जयधुव आँ रँडमान जयनगव नगव नग । दवभंगी नग पँचोभ गामसँ प्राँचु ताम्र अन्तिनेथ पव जयधुव केव रँनि अछि ।

१६.नन्दनगठ- रौतियाँसँ १२ मीन पश्चिम-उँतवमे अ किना अछि । तीन पकिन्तमे १३ ठी डुँच डीह अछि ।

१७.रौविया-नन्दनगठ- नन्दनगठसँ उँतव स्थित अछि, एतए अशोक स्तंभ आँ रौझ स्तूप अछि ।

१८.देरनीगठ- शिरहव जिनासँ तीन किलोमीठेव पूरँ हांगरे केव कातमे दू ठी किनाक अरशेष अछि । चाक दिशि थांग अछि ।

१९.कठवागठ- द्दुजखरधुवधुवमे कठवा गाममे रिशान गठ अछि, देरनी गठ जेकाँ चाक कात खधांग खूनन अछि ।

२०.लौनागठ-रौधुसवायसँ २३ किलोमीठेव उँतव ३३.० एकड़मे पसवन अ गठ अछि ।

२१.मगनगठ-रौधुसवायमे रँवियाधुव खानामे कारँव मीनक मध्य एकठाँ डुँच डीह अछि । एतए अ गठ अछि ।

२२.अलौनीगठ-खगर्ला यामँ १३ किलोमीठेव उँतव अलौनी गाम नग १०० एकड़मे पसवन अ गठ अछि ।

२३.कीचकगठ-पुर्षिया जिनामे डेगवघाँसँ १० किलोमीठेव उँतव महानन्दा नदीक पूरँमे अ गठ अछि ।

२४.रौनूगठ-रौनूगठ खानामे करन धावक कातमे अ गठ अछि ।

२५.रविजनगठ-रँहाधुवगठसँ डह किलोमीठेव दक्षिणमे नोनसरवी धावक कातमे अ गठ अछि ।

२६.सौतम तीर्थ- कमतौन स्तुशनसँ ७ किलोमीठेव पश्चिम रौधुधुव गाम नग एकठाँ सौतम हस्त प्रकविणी अछि ।

२७.हनारुठ- जनकधुवसँ ३३ किलोमीठेव दक्षिण पश्चिममे सीतामठ १ नगवमे हनरुधुव शिर मदिह आँ जानकी मदिह अछि । एतएसँ देर किलोमीठेव पव पन्डवीक स्केएमे सीताहस्त अछि । हनारुठमे जनक द्वाव हव चनधरी कान सीता भेटैनि डनीह । वाम नरमी (चैव शुवन नरमी) आँ जानकी नरमी (रौशांथ शुवन नरमी) पव एतए येना नगैत अछि ।



১৭. ফুলহব-মধুরী জিনাক হবনাথী খানামে ফুলহব গামমে জনকক পুষ্পরাটিকা ভন জতএ সীতা ফুল নোত ভনীহ ।

১৯. জনকপুব-সুহদ রিফুপুবামে মিথিনামাহাম্যে জনকপুব ক্ষেত্রক রণি খন্ডি । সত্রহম শিতাঙ্কীমে সত সুব কিশৌবকে খ্যোধ্যামে সবযু ধাবমে বাম খা২ জানকীক দু ঠা ভর মুক্তি ভেঠনহি, জকবা ও২ জানকী মন্দিব, জনকপুবমে স্থাপিত কএ দেনহি । রভমান মন্দিবক স্থাপনা ঠীকমগঙ্কক মহাবানী দ্বাবা ১৯১১ ঙ্গ. মে ভেন । নগবক চাককাত যদ্ধনী, গোকথা খা২ দৃষ্ণরতী ধাব খন্ডি । বাম নরমী (চৈত্র শুবন নরমী), জানকী নরমী (রৈশাখ শুবন নরমী) খা২ রিরাহ পচমী (খগলন শুবন পচমী) পব এতএ মেনা নগৌত খন্ডি ।

২০. ধনুশা- জনকপুবস ১৩. কিলোমীঠব উত্তব ধনুশা স্থানমে পীপবক গাঙ্কক নীচাঁ একঠা ধনুশাকাব খন্ড পঙ্কন খন্ডি । বামক তোঙ্কন ঙ্গ ধনুশ খন্ডি । এহিস পুর রাগগা ধাব রহিত খন্ডি জে নক্ষা দ্বাবা রাগস উদ্ধাঠিত ভেন ভন ।

২১. স্পগা-জনকপুব নগ জলেম্ব শিরধামক সমীপ স্পগা গ্রামমে শুকদেরজীক খাত্ৰিম খন্ডি । শুকদেরজী জনকস শিক্ষা নেরীক হেত্ত মিথিনা খায়ন ভুনাহ- এহি ঠাম হনকব ঠহররীক র্যরস্থা ভেন ভন ।

২২. সিহেম্ব- মধেপুবস ৩. কিলোমীঠব গৌবীপুব গাম নগ সিহেম্ব শিরধাম খন্ডি ।

২৩. কপিলেম্ব-কপিন দ্বাব স্থাপিত মহাদের মধুরীস ৩ কিলোমীঠব পশ্চিমম্,মে খন্ডি ।

২৪. ক্ষশেম্ব- সমস্তীপুবস উত্তব ঙ্গ একঠা শ্রিসিহ শিরস্থান খন্ডি ।

২৫. সিমবদহ-খনরাবা স্টশন নগ শিরসিহ দ্বাবা রসাওন শিরসিহপুব গাম নগ ঙ্গ শিরমন্দিব খন্ডি ।

২৬. সোমনাথ- মধুরী জিনাক সৌবাঠ গামমে সভাগাঙ্কী নগ সোমদের মহাদের ভথি ।

২৭. মদনেম্ব- মধুরী জিনাক খধবা ঠাঙ্কীস ৪ কিলোমীঠব পুর মদনেম্ব শির স্থান খন্ডি ।

২৮. রসিঠা খন্ডিলেখ- পুণিয়ামে শ্রীনগব নগ মিথিনাক্ষব ঙ্গ খন্ডিলেখ মিথিনাক পতিন মহিনা শাসক বানী ঙ্গদ্রারতীক বাজ্যকানক রণি করিত খন্ডি । একব খাধাব পব মদনেম্ব মিত্রে 'এক ভনীহ মহাবানী' উপন্যাস সেহো নিখলে ভথি ।

২৯. চঙ্কম্ব- সঁসাবপুবমে হববী গাম নগ চঙ্কম্ব ঠাঙ্কব দ্বাবা স্থাপিতচঙ্কম্ব শিরস্থান খন্ডি ।

৩০. রিদেম্ব-মধুরী জিনামে নোহনারোড স্টশন নগ স্থিত শিরধাম স্থাপনা মহাবাজ মাধরসিহ কএনহি । তাহি হগক মিথিনাক্ষবমে খন্ডিলেখ সেহো এতএ খন্ডি ।

৩১. শিনানাথ- জয়নগব নগ কমনা ধাবক কাতমে শিনানাথ মহাদের ভথি ।

৩২. উগ্রনাথ-মধুরীস দক্ষিণ পন্ডীন স্টশন নগ ভরানীপুব গামমে উগনা মহাদেরক শিরনিগ খন্ডি । রিগাপতিকে প্যাস নগনহি তাঁ উগনাকপী মহাদের জঠাস গগাজন নিকালি জন পিএনখিহ । রিগাপতিক হঠ কএনা পব এহি স্থান পব গনা হনকা খপন খসন শিরকপক দর্শন দেনখিহ ।

৩৩. উচঠ ঙ্গিমস্তিকা ভগরতী- কমতৌন স্টশনস ১৬ কিলোমীঠব পুরৌত্তব উচঠমে কানিদাস ভগরতীক পূজা করিত ভনাহ । ভগরতীক মৌনিক মুক্তি মস্তক রিহীল খন্ডি ।

৩৪. উগ্রতাবা-মন্ডন মিত্রে জন্মভূমি মহিষীমে মন্ডনক গোসাউনি উগ্রতাবা ভথি ।

৩৫. ভদ্রকালিকা- মধুরী জিনাক কোগনথ গামমে ভদ্রকালিকা মন্দিব খন্ডি ।

৩৬. চান্ডা-দ্বজখক্ষুব জিনামে কঠবগঙ্ক নগ নক্ষা রা নখনদেগ ধাব নগ দুর্গা দ্বাবা চন্ড-দ্বন্ডক রধ কএন গেন । ওহি স্থান পব ঙ্গ মন্দিব খন্ডি ।

৩৭. পবসা সূর্য মন্দিব- সঁসাবপুবমে সগ্রামস পাঁচ কিলোমীঠব পুর পবসা গামমে সঙ্ক চাবি ফীঠক ভর সূর্য মুক্তি ভেঠন খন্ডি ।



४५.रिसहली- मधुर्नी जिनक रैनीपल्ली खानामे कमतोन बेनरे सृष्टिनसँ ७ किनोमीठव पूरँ आऽ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किनोमीठव पश्चिम रिसहली गाम् अछि । रिद्यापतिक जन्म-स्थान अ गाम् अछि । एतए रिद्यापतिक स्थावक सेहो अछि ।

४६.मदाव परत-रौका स्थित स्तनमे मिथिनाम्बरक गुप्तरशीय गम् शताब्दीक अतिरिख अछि । समुद्र मंथनक हेतु मदावक प्रयोग भेन छन ।

३०.रिफमशिना-भागनपुवमे स्थित अ रिश्वरिद्यानय शैक्ष नानन्दा रिश्वरिद्यानयक रिपवीत सनातन धर्मक शिक्षाक केन्द्र बहन ।

३.१.मिथिनाक रीस ठाँ सिफ् पाठ- १.गिबिजास्थान(हूनहव,मधुर्नी),२.दुर्गास्थान(उठैठ, मधुर्नी),३.बहेश्वरी(दोखव,मधुर्नी),४.सुरनेश्वरी स्थान(भगरतीपुव,मधुर्नी),५.भद्रकानिका(कोजनथ, मधुर्नी),६.चन्द्रा स्थान(पचाली, मधुर्नी),७.सोनामाग(जनकपुव, नेपाल),८.योगनिद्रा(जनकपुव, नेपाल)९.कानिका स्थान(जनकपुव स्थान),१०.बाजेश्वरी देरी(जनकपुव, नेपाल),११.डिनमस्ता देरी(उजान, मधुर्नी),१२.रैन दुर्गा(खववथ, मधुर्नी),१३.सिधेश्वरी देरी(सविसर, मधुर्नी),१४.देरी-स्थान(खधवा ठाँ,मधुर्नी),१५.ककानी देरी(भावत नेपाल सीमा आऽ वामरीग छस, दवर्लगा)१६.उग्रतावा(महिषी, सहवसा), १७.कावानी देरी(रैदनाघाँ, सहवसा),१८.पुवन देरी(पूर्वियाँ),१९.काली स्थान(दवर्लगा),२०.जेमर्गनास्थान(हूगेव)

१०. संगीत शिक्षा-गजेन्द्र ठाँव



वामश्रिय सा "वामवर्ग" (१९२४-) रिद्वान, रागयकाव, शिक्षक आऽ मठ सम्पादक छथि ।

अतिर गीतार्जनि, हूनकव उचकोटिक शोम्त्र वचना अछि, जे पाँठ भागमे अछि । अपन साहित्यिक रागी, शोद्धिक कप जे होगत अछि कोनो संगीत वचनक, आऽ धातु जे अछि स्वरक नयक वचना आऽ एहि सभ गुणसँ हकत छथि "वामवर्ग" । वामवर्गक रैदिशे रा वचनमे अहाँकेँ भेटैत स्वर, शिद्ध आऽ मात्राक नयर्ह रँधन । पुवान झुपद जेकाँ पद्य आऽ स्वरकेँ ०२ तेनारकेँ राहि दैत छथि, जे दुनु एक दोसवमे मिलि जागत अछि । हूनकव वचना हूनकव उचावसँ मिलि कए यौनिक तात्त्विक स्थायी भवण, सभ रितेत दिन एकठाँ नर आमैनिर्विहण एकठाँ नर स्थायी ।

वामवर्गमे संगीतक नास्त्रिक तत्त्व प्रथम होगत छथि । संगीतक र्याकवणक सम्पूर्ण पकड़ छथि, जाहिसँ उचित शिद्ध प्रयोगक निर्णय ०२ कए परैत छथि । हुन्द शोम्त्रक, कोषक, अर्नकावक, भारक आऽ वसक बृहत् ज्ञान छथि वामवर्गकेँ । संगति स्थानीय संस्कृतिक, रिभिन्न भाषाक आऽ ननित कनाक सिफ्नासुक्त सेहो गहन अध्यायन छथि वामश्रिय सा जीकेँ । रादन, गाय आऽ नृत्क, साधन-कर्ष, नय-तान-कान, देशी राग, दोसवाक मनसमे जाऽ कए रूमनिहाव, नर नय आऽ अत्रर्याकित, प्ररञ्जक समस्त ज्ञान, कम समयमे गीत वचना, रिभिन्न यौथिक संवचना निर्माण, आनापक प्रदर्शन आऽ गमक एहि सभठामे पार्वगत छथि वामवर्ग ।

११. रौनाना हते-गजेन्द्र ठाँव

रौनाना हते

-गजेन्द्र ठाँव

१.मूखाधिवाज-गजेन्द्र ठाँव

१. देरीजी: पिजवाक पम्फा- ज्योति सा चोषरी

१.मूखाधिवाज



चित्र: ज्योति सा चोधरी

एकठा गौपानक डन। तकव एकठा रैठी डन। ओकव कनियार्के पुत्रक जन्मक समय मवि गेनीह। रौ रैचाक पानन कएनहि। ऋदा ओ२ रैचा डन महामूर्ख। जखन ओ२ रौवह रर्षक तेन तखन ओकव रिराह भए गेन। ऋदा ओ२ रिराहो रिसवि गेन।

रुईया रौरौके काज कबधमे दिक्कत होगत डनहि। से ओ२ रूमा-सुमारौके ओकवा कनियारौके द्विवागमन कवा कए खनरौक हेतु कहनहि। रौ ओकवा गमडामे बस्ता जेन ऋवली रौहि देनहि। बस्तामे रैचारौके भूख नगलैक। ओ२ गमडारौ ऋवली निकानि कए जखने ऋहमे देरैह चहित डन खाकि ऋवली उइरि जागत डन। रैचा रौजए नागन- खांड, खांड उइरि जांड।

नगमे रौनमे एकठा चिइ मीव जान पसावले डन, ऋदा रैचाक गप सुनि कए ओकवा रैडु तामस उठलैक। ओकवा नगलैक जेना ग रैचा ओकव चिइरौके उइरि रौए चहित खडि। चिइ मीव रैचारौके पकडि कए पुष्ट, पिठान पिठनक। रैचा पुडनक- हमव दोख तँ कइ ? चिइ मीव कहनक- एना नहि। एना रौजू। खारि जे। खँसि जे।

खारि रैचा सैह रैजेत खगु जाए नागन। खारि सौम भए बहन डन। रौन खतम होएरौना डन। ओतए चोव सभ चोविक योजना रौनाए बहन डनाह। ओ२ सभ सुननहि जे ग रैचा हमवा सभके पकडि रौए चहित खडि। से ओ२ लोकिन सेहो ओकवा पुष्ट, पिठान पिठनहि। रैचा खेव पुडनक- हम रौजी तँ की रौजी ? चोवक सवदाव कहनक- रौज जे एहन सभ घबमे होए।

खारि रैचा सैह कहत खगु रैडु नागन। खारि शमानभूमि खारि गेन। एकठा जमीन्दारक एकेठा रैठी डलैक। से मवि गेन डन खांड सभ ओकवा डारौक जेन खारि बहन डनाह। ओ२ लोकिन रैचाक गप पव रैडु रूपित तेनाह खांड ओकवा पुष्ट, पिठनहि। खेव जखन रैचा पुडनक जे की रौजरौ उचित होएत तँ सभ गौठे कहनखि जे एना रौजू- एहन कोनो घबमे नहि होए। रैचा सैह गप रौजए नागन। खारि नगव खारि गेन डन खांड वाजाक रैठीक रिराहक रौजा-रौजी सभ भए बहन डन। रौवियाती लोकिन रैचारौके कहत सुननहि जे एहन कोनो घबमे नहो होए तँ ओ२ लोकिन दाधित भए खेव ओहि रैचारौके पिठपिठ देनखि। जखन रैचा पुडनक जे की रैजरौक चाही तँ सभ कहनकहि जे किड नहि रौजू। ऋह रौन बाखु।

रैचा सासुव खारि गेन। ओतए नहिये किड रौजन नहिये किड खनक, कावण खएरौमे ऋह खोनए पडि तैक। भोले सकाजे सासुव रौना सभ खपन रैठीके ओहि रैचाक सर्ग रिदा कए देनहि। बस्तामे रैडु शखव रौद डलैक। ओ२ सुस्ताए नागन। ऋदा कनममे सेहो रैडु ग्वाव डलैक। कनियारौके रैडु ग्वाव खसए नगलैक खांड तालिसँ ओकव सिन्दूर धोखवि गेलैक। रैचारौके भेलैक जे सासुव रौना ओकवारौके डन कएनक खांड ओकवा उँगनाहो कपाव रौना कनियारौ दए जाग गेन खडि। एहन कनियारौके गाम पव नए जाय ओ२ की कवत। ओ२ तखने एकठा हजामरौके रैकरी चबरेत देखनक। ओकवारौके खपन पेटक रौत कहरौक जेन खपन ऋह खोननक खांड सभठी कति गेन। हजाम रौमि गेन जे ग रैचा मुखाधिवज खडि। ओ२ ओकवा खपन दुध दए रौनी रैकडि क सर्ग कनियारौके रैदनेन कवरौक हेतु कहनक। रैचा सहर्ष तेयाव भए गेन। खगु ओ२ रैचा सुस्ताए नागन खांड खुँसि रैकडि रौके रौहि देनक। रैकडि पाँउज कवध नागन तँ रैचारौके भेलैक जे रैकडि ओकव ऋह दुसि बहन खडि। ओ२ ओकवा हाँ नए गेन खांड कदीमाक सर्ग ओकरो रैदनेन कए जेनक। गाम पव जखन ओ२ पईचन तँ ओकव रौ रैडु प्रसन्न भेलीह। हनका भेलहि जे कनियारौके नेहवसँ सनेसमे कदीमा खएन खडि। ऋदा कनियारौके नहि देखि तकव जिसेसा कएनहि तँ रैचा सभठी खिसा सुना देनकहि। ओ२ माथ पीठि जेनहि। ऋदा रैचा ग कहत खेनाए चनि गेन जे कदीमाक तवकावी रौना कए बाखु।

२. देरीजी: पिजवाक पम्ही



चित्र: ज्याति या चौधरी

एकठा शिम्बिका डनीह, जिनका गाम पव सभ देरी जी कहेत डनहि । हुनकासँ सभ रिद्यार्थी देवागतो डन, हुदा सम्मान सेहो करैत डन । एक दिन ओइ एकठा कम्बामे गेनीह तँ हुनका एकठा ड्यात्र पिजवामे रँद एकठा सुग्गा देनकहि, जकवा 'देरी जी' रँजनाग सिखा देन गेन डन । ओकवा रँजेत सुनि सभ ड्यात्र श्रमल भुं हँ 'सं नागन । देरीजी ओकवा तकोन झुकाव कइ पठारुं मे नागि गेनीह । रौदमे ओइ ओहि रौनकसँ पुँडनथिह जे " जौं अहाँकेँ का अपन शौक पूवा कवइ नेन सभसँ अलग कइ छोठ जगह पव राहि कइ बाथए तँ केहन नागत । हमवा एहि तँसँ कोनो खुशी नहि भेन" । रौनककेँ अपन गनतीक अन्नभर भुवत भइ गेलैक । ओइ भुवत ओहि पम्मीकेँ पिजवासँ हुँज कइ देनक ।

अगिना दिन देरी जी सभकेँ पम्मी देखराक अलग तबीका सिखेनथिह । पाठशालाक प्रांगणक एकान्त स्थान पव एकठा पुवान ठेँरुं बाथि देनथिह । ताहि पव मकड़ा, चाँडव, गहुँ, अँकरेन चना, रौठीक धुँकड़ा, कठेबीमे पानि आदि बाथि देनथिह । सभ का दूब रँसि कइ प्रतीक्षा कवइ नगलेथ । कनिके देरीमे तवह-तवहक पम्मी ओतए हनचन कवइ नागन । अ दृष्य सभक नेन ओहि पिजवामे पम्मी देखरासँ रँसि सुखद डलेक । तखन देरीजी कहनथिह "असनी खुशी दोसवाक खुशी कवरांमे डेक । अपन स्मार्थ मात्र नेन दोसवाकेँ कष्ट, देनाग पाप कहागत डेक । सभ रँचा शिपथ नेनक जे अर कोनो पम्मीकेँ पिजवामे रँद नहि कवत ।

रँचा नोकलि द्वावा अंबणीय झोक

१.प्रातः कान जँलहुँहुँ (सूर्योदयक एक घंटा पहिले) सरप्रथम अपन दूनु हाथ देखराक चाली, आ अ झोक रँजराक चाली ।

कवाथे रसते नम्मी: कवमन्था सबसती ।

कवमुने स्थितो जँला श्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक अगाँ नम्मी रँसत डथि, कवक मथमे सबसती, कवक मुनमे जँला स्थित डथि । भोवमे ताहि द्वावे कवक दर्शन कवराक थीक ।



२.संध्या कान दीप त्रैसरीक कान-

दीपमूले स्थितो ज्ञेया दीपमन्थ जनार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः श्राकतः सन्धाज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मून भागमे ज्ञेया, दीपक मधाभागमे जनार्दन (शिखर) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित इति । हे संध्याज्याति । अहाँके नमस्काव ।

३.सुतरीक कान-

वार्म रून्द् तनुमन्तं त्रेनतेयं वृकोदवम् ।

शियले यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ॥

जे सभ दिन सुतरीक पहिले वार्म, क्रमावस्त्राम्, तनुमान, गकड आऽ भीमक स्मरण करैत इति, हुनकव दुःस्वप्न नष्ट, भऽ जागत इति ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गले तैर गौदारवि सबलति ।

नर्मदे सिन्धु कारेवि जनेऽग्निन् सन्निधिं ऋक ॥

हे गंगा, यद्गना, गौदारवी, सबलती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कारेवी धाव । एहि जनमे अपन सांनिध्य दिअ ।

५.उत्तर्व यसेन्द्रस्य हिमाद्रेश्चर दक्षिणम् ।

रर्ष तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उत्तवमे आऽ हिमानयक दक्षिणमे भावत अति आऽ उत्तका सन्तति भावती कहलैत इति ।

६.अहना द्रौपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना स्मरेन्नितं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मन्दादरी, एहि पाँच साङ्गी-स्त्रीक स्मरण करैत इति, हुनकव सभ पाप नष्ट, भऽ जागत इति ।

७.अश्वथोमा रैनिर्यासो तनुमाश्च रितीषाः ।

द्रुपः पवश्वामश्च सन्तते चिवङ्गीरिनः ॥

अश्वथोमा, रैनि, र्यास, तनुमान, रितीषा, द्रुपाचार्य आऽ पवश्वाम- आ सात ठी चिवङ्गीरी कहलैत इति ।

८.साते भरत स्वपीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा नङ्गा यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साधु सतामन्तु शसादान्तस्य धूर्जटेः



जाल्हररीफेननेखेर यन्धुधि शैशिनः कना ॥

५. रौनोऽहं जगदानन्द न मे रौना सबस्रती ।

अपूर्णे पचमे रर्षे रर्ष्यामि जगत्त्रयम् ॥

१२. पङ्गी श्रद्ध-गजेन्द्र ठाकुर

पङ्गी श्रद्ध



पंजी-संघाटक- श्री रिद्यानन्द सा पङ्गीकाव (श्रसिद्ध मोहनजी)

श्री रिद्यानन्द सा पङ्गीकाव (श्रसिद्ध मोहनजी) जन्म-09.04.1957, पञ्जुआ, ततेन, ककबोड(मधुरैनी), वशीहया(पूर्विया), शिरनगव (अवविया) आ समप्रति पूर्विया । पिता नई खेत पङ्गीशोम्त्र मार्डुल्ड पङ्गीकाव मोदानन्द सा, शिरनगव, अवविया, पूर्विया। पितामह-स्र. श्री भिथिया सा । पङ्गीशोम्त्रक दस रर्ष धवि 1970 ज.सँ 1979 ज. धवि अथायन, 32 रर्षक रयससँ पङ्गी-श्रद्धक संरर्जन आ संवर्णामे सन्नन । प्रति- पङ्गी शोथा पुस्तकक निष्ठावण आ संरर्जन- 800 पृष्ठासँ अधिक अकन सहित । पङ्गी नगवमिक निष्ठावण ओ संरर्जन- नगल्लग 600 पृष्ठासँ उपव(तिवहता निष्ठासँ देरनागरी निष्ठासँ) । ग्रक- पङ्गीकाव मोदानन्द सा । ग्रक ग्रक- पङ्गीकाव भिथिया सा, पङ्गीकाव निवसू सा श्रसिद्ध रिद्धिनाथ सा- सौवार्ठ, पङ्गीकाव नूठन सा, सौवार्ठ । ग्रक शोम्त्रार्थ पर्वीका- दवर्तगा महाबाज क्रमाव जीरेद्धेव सिंहक यज्ञोपरीत संकावक अरसव पव महाबाजाधिवाज(दवर्तगा) कामेद्धेव सिंह द्वावा आयोजित पर्वीका- 1937 ज. जाहिमे मोथिक पर्वीकाक द्वाथ पर्वीकाक म.म. ड०. सब र्गगानाथ सा ड्नाह ।

संस्कृत श्लोकक अर्थ एर प्रकारे अछि-

*रवक मातृकनक प्रकषसँ कया पाँचम पीढ़ी धविक सन्तान नहि होथि । रवक पितृकनक छठम पीढ़ी धविक सन्तान नहि होथि ।

*जे कया रवक मातृकनक ७२ पितृकनक सपिन्ड अछि होथि से द्विजाति रवक हेतु उद्घाट कर्मक जेन श्रेश्ठ ।

*मातृकनमे पाँच आऽ पितृकनमे सात पीढ़ी धवि सपिन्ड बहेछ ।

कोनो कयाक छठक अक्षरणा हेतु ३२ मूनक उतेठ रनारैए पड़ैत छैक । ताहिमे सरप्रथम उतेठक राम भागमे कयाक ग्राम, मून ग्राम निखन जागत छैक । तहिसे अरारहित दहिन भागमे मून आऽ तकव नीचाँ कयाक अति रूख अपितामह, रूख अपितामह, रूख पितामह, अपितामह, पितामह आऽ तखन पिताक नामोल्लख अरारोही क्रमसँ निखन जागत छैक । एहि मथा रूख अपितामह पहिन छठि कहउताह, जनिकासँ कया छठम स्थानमे पड़ैत छैक । प्रस्तुत उदाहरणमे कवमहा मूनक रेंहठे मूनग्रामक रिद्धि ग्रामरानी (दवर्तगा) पीतामहक माक पौत्री श्री शशिनाथ माक पुत्री जेव ग्रामरानी खलरैना मूनक जेव मूनग्रामक नावायादतु ठाकुरक दौहित्री- धवमपुव दवर्तगा- क अक्षिकाव दविहवा मूनक बतौनी मूनग्रामक नोहनारानी गोपीनन्द माक पौत्र श्री प्रज्ञानन्द माक रौनक कवमहा मूनक रेंहठे मून ग्रामक रिद्धि निरानी कन्या माक दौहित्रसँ जँचरीक अछि ।

द्वितीय छठि-

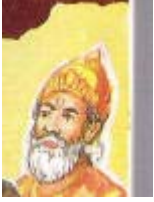
(अन्वर्तते)



१३. संस्कृत मिथिना –गजेन्द्र ठाकुर

संस्कृत मिथिना

–गजेन्द्र ठाकुर



जनक

'रैदेह राजा' ऋग्वेदिक कानक नमो सपाक नामसँ छनाह, यत्र करैत सदेह ब्रह्म गेनाह । ऋग्वेदमे रर्षि अछि । ३२ गन्दक संग देनहि अश्व नरुचाक रिक्छ आऽ ताहिमे गन्द हुनका रँचउनहि ।

पुरोहित गौतम बाहुगण ऋग्वेदक एकठा महउत्तपूर्ण ऋषि छथि । शुक्ल यजुर्वेदक त्रेखक कपमे यात्ररके प्रसिद्ध छथि । शतपथ ब्राह्मणक माथर रिदेह आऽ पुराणक निमि दनु गौठेक पुरोहित गौतम छथि से दनु एके छथि आऽ एतएसँ रिदेह राजक प्राबन्ध देखन जाऽ सकैत अछि । माथरक पुरहित गौतम मित्ररिन्द यत्रक/रिनिक प्राबन्ध कएनहि आऽ पुनः एकव पुनः स्थापना भेन महाजनक २ केव समयमे यात्ररके द्वावा । निमि गौतमक आश्रमक नग जयन्त आऽ मिथि जिनका मिथिना नामसँ सेहो सोव कएन जागत छति, मिथिना नगवक निर्माण कएनहि ।

'सौवर्णज जनक' सीताक पिता छथि आऽ एतएसँ मिथिनाक राजक सुदृढ पवशवा देखरामे अरैत अछि । 'प्राति जनक' सौवर्णजक रौदक 18य पुस्तमे भेन छनाह ।

प्राति विवर्णनाभक पुत्र छनाह, आऽ जनक रँहनाभिक पुत्र छनाह । यात्ररके विवर्णनाभक शिष्य छनाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छनाह । कवान जनक द्वावा एकठा ब्राह्मण यरतीक शीन-अपहवणक प्रयास भेन आऽ जनक राजरंश समाप्तु भए गेन (अग्निघोष-रँचचित आऽ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)

१४. मैथिनी भाषापाक

गणिश-मैथिनी कोष

मैथिनी-गणिश कोष

गणिश-मैथिनी कोष आजेकठकेँ आगु रँड डँ, अपन सुमार आऽ योगदान अ-मेन द्वावा ggajendra@yahoo.co.in रा ggajendra@videha.co.in पव पठाडँ ।

मैथिनी-गणिश कोष आजेकठकेँ आगु रँड डँ, अपन सुमार आऽ योगदान अ-मेन द्वावा ggajendra@yahoo.co.in रा ggajendra@videha.co.in पव पठाडँ ।

१५. वचना लेखन-गजेन्द्र ठाकुर

जखन हमवा सबकेँ गप कवरक गछा होगत अछि, तखन संकल्पसँ जठवाग्नि प्रेषित होगत अछि । नाभि नगक राघु रेषसँ उठैत मूर्धा धवि पँचि, जिल्लक अथादि भाग द्वावा निरोध भेनाक अन्तुव रुखक तारु आदि भागसँ घर्षित होगत अछि आऽ तखन रर्षिक



उपेति होगत अछि । कम्पन भेनासँ राह नानरान अाँ येह गुँजित होगत पढँतेत अछि झूहमे अाँ ओकवा कहन जागत अछि घोषरान, नानदवहित भए पढँतेत अछि न्नासमे अाँ ओकवा कहन जागत अछि अघोषरान ।

न्नास प्रगतिक रर्षि भेन 'अघोष' , अाँ नान प्रगतिक भेन 'घोषरान' । जाहि रर्षिक उपेतिमे प्राणराहक अल्पता होगत अछि से अछि 'अल्पप्राण' अाँ जकव उपेतिमे प्राणराहक रूहनता होगत अछि, से भेन 'महाप्राण' ।

कचठतप केव पहिन, तेसव अाँ पाँचम रर्षि भेन अल्पप्राण अाँ दोसव अाँ चाबिम रर्षि भेन महाप्राण । संगहि कचठतप केव पहिन अाँ दोसव भेन अघोष अाँ तेसव, चाबिम अाँ पाँचम भेन घोषरान । य व न र भेन अल्पप्राण घोष । शि य स भेन महाप्राण अघोष अाँ ह भेन महाप्राण घोष । स्रव ओगुह अल्पप्राण, उदान्त, अन्नदान्त अाँ स्रवित ।

(अन्नरतते)

मैथिलीक मानक लेखन-शैली

1. जे शिद्ध मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ अाँग धरि जाहि रर्षिनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्षिनीमे निखन जाय- उदान्त-शार्य-

श्राह

अश्राह

एखन

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठाँम

ठिमा, ठिना, ठिमा

जकव, तकव

जेकव, तेकव

तनिकव

तिनिकव । (ट्रेकम्पिक कर्षेँ श्राह)

अछि

अँछ, अहि, ए ।

2. निम्नलिखित तीन श्रकावक कर्ष ट्रेकम्पिकतया अल्पनाउन जायः
भ गेन, भय गेन रा भए गेन ।
जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि ।
कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवए गेनाह ।
3. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत अछि यथा कहननि रा कहनहि ।
4. 'अँ' तथा 'अँ' ततय निखन जाय जत स्पष्टतः 'अँ' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा- देखैत, डकैक, दौआ, डौक गवादि ।
5. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कर्षेँ श्राह होयतः
जेह, सैह, अएह, अँह, नैह तथा दैह ।
6. स्रव अकावात शिद्धमे 'अँ' के अल्प कवरेँ सामान्यतः अश्राह थिक । यथा- श्राह देखि अरैह, मानिनि गेनि (मन्त्रय मात्रमे) ।
7. स्रवत अद्र 'अँ' रा 'अँ' प्राचीन मैथिलीक अँहवण अदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किन्तु अधुनिक श्रयोगमे ट्रेकम्पिक कर्षेँ 'अँ' रा 'अँ' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाए गवादि ।



8. उच्चारणमे दू स्वरक रीच जे 'य' ध्वनि स्रुतः खरि जागत खडि तकवा लेखमे स्थान त्रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- धीखा, खडिखा, रिखाह, रा धीया, खडिया, रियाह ।
9. सावनासिक स्रुतत्र स्वरक स्थान यथासंभर 'ए' निखन जाय रा सावनासिक स्वर । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ ।
10. कावकक रिभक्तिउक निम्ननिखित कप ग्राह:-
हाथकेँ, हाथसेँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।
'मे' मे खनुस्त्राव सरखा वाज्य थिक । 'क' क त्रैकल्पिक कप 'केव' बाखन जा सकैत खडि ।
11. पुर्रकानिक फियापदक रौद 'कय' रा 'कए' खरय त्रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत खडि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।
12. माँग, भाँग खदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि निखन जाय ।
13. खर्र 'न' ओ खर्र 'म' क रँदना खनुसाव नहि निखन जाय(खपरद-संसाव सजाव नहि), किंतु डापाक सुविधार्थ खर्र 'ँ' , 'ए', तथा 'ण' क रँदना खनुस्त्रारो निखन जा सकैत खडि । यथा:- खर्र, रा खक, खर्रन रा खर्रन, कठ रा कठ ।
14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभजिक संग खकावात श्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।
15. सभ एकन कावक चिह्न शिद्धमे सठाँ क' निखन जाय, हठाँ क' नहि, संहाज रिभजिक हेतु हवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।
16. खनुनासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वावा राज कयन जाय । पर्वतु द्रुद्रक सुविधार्थ हि समान जठिन मात्रा पब खनुस्त्रावक श्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत खडि । यथा- हि केव रँदना हि ।
17. पूर्ण रिवाय पासीसँ (।) सूचित कयन जाय ।
18. समस्त पद सठाँ क' निखन जाय, रा हागफेनसँ जोर्रि क' , हठाँ क' नहि ।
19. निख तथा दिख शिद्धमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।
- 20.

हाह

खहाह

1. जोयरँना/होरँयरँना/जोमयरँना/
जोयरीक/जोपरीक
2. खाँ/खाँ
3. क' जेने/क२ जेने/कए जेने/कय जेने/
न/न२/नय/नए
4. भ' गेन/भ२ गेन/भय गेन/भए गेन
5. कव गेनाह/कव२ गेनाह/कवए गेनाह/कवय गेनाह



6. निख/दिख	निय,दिय,निख,दिय
7. कब रैना/कब२ रैना/ कबय रैना	करै रैना/क'ब रैना
8. रैना	रना
9. खाँन	खाँन
10. प्रायः	प्रायह
11. दूः ख	दूख
12. चनि गेन	चन गेन/चैन गेन
13. देनखिन्ह	देनकिन्ह, देनखिन
14. देखनहि	देखननि/ देखनैन्ह
15. डखिन्ह/ डनहि	डखिन/ डनैन/ डननि
16. चनैत/दैत	चनति/दैति
17. एखनो	खनो
18. रैठहि	रैठहि
19. ओ'/ओ२(सररनाम)	ओ
20. ओ (सयोजक)	ओ'/ओ२
21. फाँगि/फान्नि	फाँगि/फाँगि
22. जे	जे/जे२
23. ना-बुक्ब	ना-बुक्ब
24. केनहि/कएनहि/कयनहि	
25. तखन तँ	तखनतँ
26. जा बहन/जाय बहन/जाए बहन	
27. निकनय/निकनए नागन रैहवाय/रैहवाए नागन	निकन/रैहवै नागन
28. ओतय/जतय	जत'/ओत'/जतए/ओतए
29. की फूडन जे	कि फूडन जे
30. जे	जे/जे२



31. कुदि/यादि(मोन पावर) कुणद/याणद/कुद/याद
32. गहो/ओहो
33. हंस/हंसय हंस
34. लो आकि दस/लो किरा दस/लो रा दस
35. सान्-सन्व सान-सन्व
36. डह/सात ड/डः /सात
37. की की/की२(दीर्घाकावास्तुमे रजित)
38. जरार जरार
39. कबएताह/कबयताह कबेताह
40. दनान दिशि दनान दिशि
41. गेनाह गएनाह/गयनाह
42. किड आव किड ँव
43. जागत डन जाति डन/जेत डन
44. पईचि/भेठि जागत डन पईच/भेठ जागत डन
45. जरान(यरा)/जरान(होजी)
46. नय/नए क/क२
47. न/न२ कय/कए
48. एखन/अखने अखन/एखने
49. अहीके अहीके
50. गहीव गहीव
51. धाव पाव केनाए धाव पाव केनाय/केनाए
52. जेकाँ जेकाँ/जकाँ
53. तेहिना तेहिना
54. एकव एकव



55. रँहिनड	रँहलोग
56. रँहिन	रँहिन
57. रँहिन-रँहिनोग	रँहिन-रँहिनड
58. नहिले	
59. कवरौ/कवरौय/कवरौए	
60. त/त २	तय/तए
61. भाय	भै
62. भाँय	
63. यारत	जारत
64. माय	मै
65. देह्लि/दएह्लि/दयह्लि	दह्लि/दैह्लि
66. द/द २/दए	

किड खव शिङ्ग

मानक मैथिली ३

तका कए तकाय तकाए

पैरे (on foot) पएरे

ताहूमे ताहूमे

पुत्रौक

रँजा कय/ कए

रँननाय

कोना

दिनुका दिनका

ततहिसँ

गवरँउनह्लि गवरँनह्लि

रौब रौवू



चेह चिह (अक्षर)

जे जे

से/ के से/के

एखनका अखनका

भूमिहाव भूमिहाव

सुगव सुगव

सर्ठाक सर्ठाक

डुरि

कवगयो/उ करैयो

पुरावि पुरांग

सगड 1-साँटी सगड 1-साँटी

पएरे-पएरे पौरे-पौरे

खेनएरौक खेनेरौक

खेनाएरौक

नगा

होए- हो

बुँमन बुँमन

बुँमन (संरोधन अर्थमे)

येह यएह

तातिन

अयनाय- अयनांग

निम- निन्द

रिन रिन

जाए जांग

जांग(*in different sense*)-*last word of sentence*

डत पव आरि जांग

ले

खेनाए (*pl ay*) -खेनांग



शिकागत- शिकायत

ठप- ढप

पढ- पठ

कनिथ/ कनिये कनिथे

वाकस- वाकने

होथ/ होय होथ

खडवदा- ँवदा

बुमैनहि (*different meaning- got understand*)

बुमथनहि/ बुमयनहि (*understood himself*)

चनि- चन

थधाग- थधाय

मोन पाडनथिह मोन पावनथिह

कैक- कथक- कथक

नग नग

जबेनाग

जबउनाग- जबथनाग/जबयनाग

होगत

गडरैनहि/ गडरौनहि

चिथेत- (*to test*) चिथगत

कवथयो(*willing to do*) करैयो

जेकवा- जकवा

तकवा- तकवा

रिदेसव स्थानेमे/ रिदेसरे स्थानमे

कवरैयनहुँ/ कवरैथनहुँ/कवरैनहुँ

हाविक (उँछावण हागवक)

ओजन रजन

थथे भाग/ थथे-भागे

पिचा/ पिचाय/पिचाथ



नक्ष/ ले

रैछा नक्ष (ले) पिछा जाय

तखन ले (नक्ष) कहैत अछि ।

कतेक गौटे/ कताक गौटे

कमाज- धमाज कमाज- धमाज

नग नग

खेनाग (for playi ng)

डुखिन्ह डुखिन

होगत होग

का कियो

केशे (hai r)

केस (court -case)

रैननाग/ रैननाय/ रैननाथ

जबेनाग

फवसी फर्सी

चबचा चर्चा

कर्म कवम

डुमारैय/ डुमारैय

एखनका/ अखनका

नय (राकाक अतिम शैङ्ग)- न

कएनक केनक

गवमी गर्मी

रैवदी रदी

सुना गेनाह सुना/सुनाः

एनाग-गेनाग

तेनाले घेबनहि

नक्ष

डरो डरो



कतह- कली

उमविगव- उमवगव

भविगव

खोन/खोखन खोवन

गप/गप्प

के के

दवरँज्जा/ दवरँजा

ठाम

धवि तक

घुवि लोष्ट

खोवरेक

रँडु

तोँ तूँ

तोँहि(पद्यमे थाह)

तेँही/तेँहि

कवरँगए कवरँगये

एकेठाँ

कवितथि कवतथि

पँटि पँच

बाखनहि वखनहि

नगनहि नागनहि

सुनि (उचावण सुगन)

खडि (उचावण खगड)

एनथि गेनथि

रितउने रितेने

कवरँउनहि/ कवेनथिह

कवएनहि

खकि कि



<http://www.videha.co.in/> मानुषीमिह संस्कृतम्

पङ्क्ति पङ्क्ति

जवाय/ जवाय जवाय (खाणि नगा)

से से

हाँ ये हाँ (हाँये हाँ रिभक्तिउये लठ्ठा रुथ)

फेन फेन

फगन(spaci ous) फेन

होयतहि/ होयतहि हेतहि

हाथ मटिआयर/ हाथ मटियाँरय

फेका फेका

देखाय देखा

देखाय देखा

सतुवि सतुव

साहेरै साहेरै

१३. VI DEHA FOR NON RESI DENT MAI THI LS

VI DEHA M THI LA TI RBHUkti TI RHUT---

The site near Darbhanga Railway Station, Harahi, meaning in Maithili language, the site of bones is still unclassified and unstudied. The study of primitive castes and tribes of Mthila may however be conducted. As early as the 5th century A. D. several tribes made up the Vajjian Confederacy one of the constituent was Lichhavis, for a long time they were considered as foreign stock Jyotirivar's Var nar at nkar a enumerates various other tribes, namely, Tatama, Dhanukha, Coara, Khatbe, Arata.

The Brahmanas did not cross Sadanira. When Malhava reached the Sadanira he asked the Agni, where shall be his abode. Agni replied that to the east of Sadanira. Agni did not burnt the Paurava territory including N Panchala and the Ayodhya as these were and they remained cultivated regions even in early times which is absurd. If it enshrines any historical truth, it might mean that the reformed Brahmanism passed from the Bharata Kingdom to Ayodhya and then to Vidcha.

Videha country was following Vedic culture long before the Brahmana age in the early Samhita age of the Rigveda. Yajurveda Samhita mentions the cows of Videha as particularly famous in Ancient India. In Brihadaranyaka Upanishad Samrat Janaka is mentioned as a great patron of Vedic culture and the Videha Brahmanas were superior to the Kuru Panchalas in the Upanishadic phase of the development of Vedic culture. A particular sacrificial rite fire adds, Gautama Rahugana is credited with the discovery of the Mtravinda sacrifice, further revived by Emperor Janaka, through



Yajnaval kya. Nari Sapyai Vai deha Raja performed elaborate sacrifices and reached heaven, the name of this King appears in several passages in the Rigveda, e.g., Nari was the friend and associate of Indra in quarrelling the Asura Namuci and in the fight with Namuci Indra protected Nari Sapyai.

Maithila Raja learnt the science of fighting with race from Duryodhana. When the centre of power shifted from the city of Mthila to the city of Vaisali about 34 kms. north of Muzaffarpur, here the Videhan princes formed one of the eight important clans of Vajjian confederacy.

During the age of Mauryas Mthila became subject to the suzerainty of Magadh but Lichchhavis were not completely exterminated. Their name, however, is conspicuous by its absence at the Second Buddhist council held in c 377 B.C. or when Asoka installed an uninscribed pillar at this place in 250 B.C. But after two centuries from then Kautilya speaks about Sangha form of government and advises King Chandragupta Maurya of Magadha to seek the help of these Sanghas which, on account of their unity and concord were almost unconquerable.

During the age of the Guptas the Lichchhavis appear to have possessed considerable political power in North East India. Chandragupta has Lichehavi wife Kumaradevi. Chandragupta II's son Govindgupta was the governor appointed over the Province which came to be known as Tirabhukti. Excavations at Basarh, the ancient site of Vaisali have yielded a hundred and twenty varieties of seals, and a variety of coins of the Gupta Age. The seals are those of Officials, which were attached to the governors or chiefs of that district residing at Vaisali. The number of seals attached to letters sent by merchants and bankers, point to the large commercial transactions that were conducted in these days between the chiefs and important traders from Patliputra and other cities. It seems that a chamber of commerce like institution was in force.

(C) २००४ सर्वाधिकार सुरक्षित । (C)२००४.सर्वाधिकार लेखकाधीन आ२ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन ।

'विदेह' (पाक्षिक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर । एतय प्रकाशित बचना सभक कॉपीवागुठ लेखक/संग्रहकर्ता लोकनिक नगमे बहत्ति, मात्र एकव प्रथम प्रकाशिक/आकर्षक/अग्रज-संस्कृत अग्रवादक अधिकार एहि अ पत्रिकाले छैक । बचनाकाव अपन मोनिक आ२ अप्रकाशित बचना (जेकव मोनिकताक संपूर्ण उतुवदायित्व लेखक गणक मध्य छुहि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.co.in के मेन अटैचमेण्टक रूपसे .doc, .docx आ२ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन सम्मिलित पविचय आ२ अपन स्वन कएन गेन हलाठे पठैताह, से आशा करैत छी । बचनाक अतमे ठागप बहय, जे अ बचना मोनिक अछि, आ२ पहिन प्रकाशिक हेतु विदेह (पाक्षिक) अ पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेन आपु नोयरीक रीद यथासंभर शीघ्र (सात दिनक जीतव) एकव प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । एहि अ पत्रिकाले शीघ्र नमस्ती ठाकुर द्वारा मासक 1 आ२ 15 तिथिके अ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

बचनाक अग्रवाद आ२ पुनः प्रकाशिक किरा आकर्षक उपयोगक अधिकार किराक हेतु ggajendra@videha.co.in पब संपर्क कक । एहि सागुठके शीघ्रि न्मा ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ२ बन्धि प्रिया द्वारा डिजागन कएन गेन ।

सिद्धिबद्ध